मूल्य : 25 रुपये
अप्रैल - जून, 2023

वर्ष : 12, अंक : 48

नर्मदा समग्र

नदी के घर से नदी की बात...

नदी अनुरागी
नर्मदासुत
पर्यावरणविद
चिंतक-विचारक
रणनीतिकार
लेखक
संगठक
कर्मयोगी

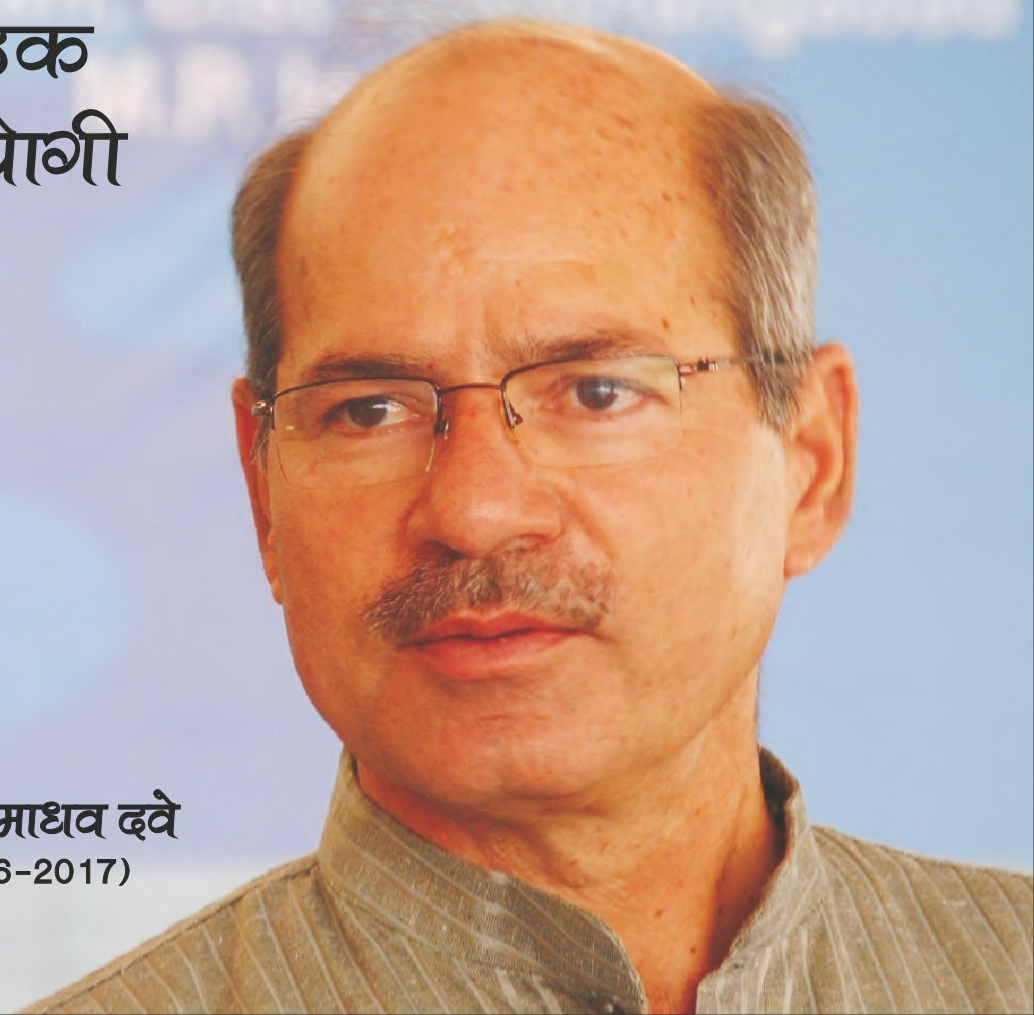

अनिल माधव दवे
(1956-2017)

नर्मदा समग्र

का त्रैमासिक प्रकाशन

वर्ष : 12 | अंक : 48

माह : अप्रैल - जून 2023

संस्थापक संपादक : स्व. अनिल माधव दवे

संपादक : कार्तिक सप्रे

संपादकीय मण्डल : डॉ. सुदेश वाघमारे

संतोष शुक्ला

आकल्पन : संदीप बागड़े

मुद्रण : नियो प्रिंटर्स, 17-बी-सेक्टर, औद्योगिक क्षेत्र गोविन्दपुरा, भोपाल

सम्पर्क : 'नदी का घर'

सीनियर एम.आई.जी.-2, अंकुर कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल-462016

E-mail : narmada.media@gmail.com

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक श्री करण सिंह कौशिक द्वारा नियो प्रिंटर्स, 17-बी, सेक्टर, औद्योगिक क्षेत्र गोविन्दपुरा, भोपाल से मुद्रित एवं नदी का घर सीनियर एम.आई.जी.-2 अंकुर कालोनी, पारूल अस्पताल के पास शिवाजी नगर, भोपाल-462016 से प्रकाशित

संपादक : कार्तिक सप्रे। फोन : 0755-2460754

@narmadasamagra @narmada_samagra

@narmadasamagra @narmadasamagra

@narmadasamagra www.narmadasamagra.org

इस अंक में .....

मन की बात 100वाँ एपिसोड

1. संपादकीय 05
2. नीम नदी उद्गम का पुनर्जीवन 07
3. बूंदों की बांधनी है तालाब 13
4. बड़े बांध है जलीय पर्यावरण के क्षरण... 16
5. कर्तव्यों से विमुख होता समाज 18
6. नर्मदा कि धारा से समृद्ध है निमाड़... 20
7. डगोना जलप्रपात मेला और बैगा समुदाय... 23
8. नर्मदांचल के वृक्ष - तिन्सा 27
9. नर्मदा घाटी में संत परंपरा 28
10. माँ नर्मदा उत्तरवाहिनी परिक्रमा 30
11. जल जीवन ध्येय - मेरा प्रयास 32
12. यमुना बाढ़ के मैदानों से संबंधित... 34
13. जयंत सहस्त्रबुद्धे जी को श्रद्धांजलि 37
14. चौथे राष्ट्रीय जल पुरस्कार में जल.... 45

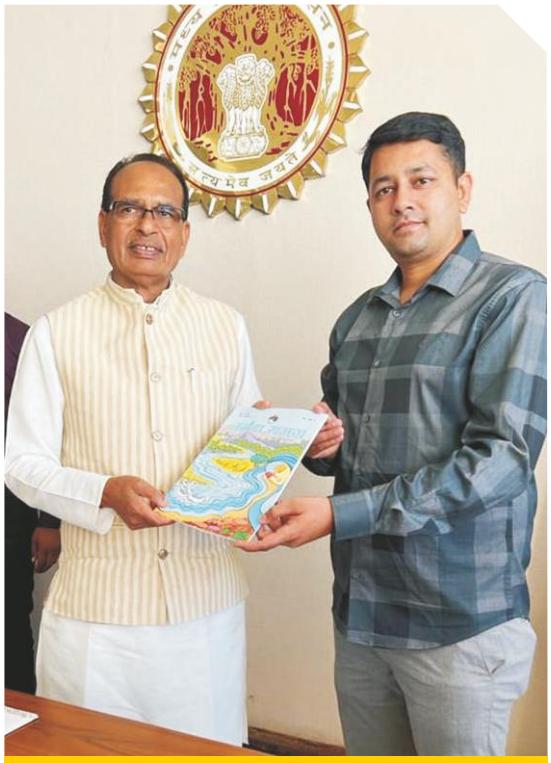

माननीय मुख्यमंत्री मध्यप्रदेश, नर्मदा अनुरागी श्री शिवराज सिंह चौहान को ''नीर, नदी और नारी'' विषय पर प्रकाशित पत्रिका भेंट की गई। इस अंक के लिये हमें माननीय मुख्यमंत्री जी का संदेश प्राप्त हुआ।

केंद्रीय मंत्री वन, पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय भारत सरकार के मंत्री श्री भूपेन्द्र यादव को श्री कार्तिक सप्रे ने रेवा रेडियो के बारे में अवगत कराया एवं स्मृति चिन्ह (logo) भेंट किया। साथ ही नई नदी एम्बुलेंस के बारे में बताया। मंत्री जी ने नदी पारिस्थितिकी संबंधी कार्यों को अधिक जनोन्मुखी बनाने हेतु मार्गदर्शन प्रदान किया।

भोपाल की महापौर माननीय श्रीमती मालती राय दिनांक 29.06.2023 को डॉ. सुदेश वाघमारे जी के निवास पर पधारीं उन्हें नर्मदा समग्र पत्रिका भेंट कर अंक की महत्ता का विवरण अर्थात नदी, नीर और नारी के बारे में जानकारी दी गई।

नर्मदा जी में प्रजनन काल में मछलियों को मारने पर रेक वाले विषय में पुलिस अधीक्षक श्री मनोज कुमार जी से धार उनके कार्यालय में सौजन्य भेंट।

नदी और जलवायु परिवर्तन

आज समय की आवश्यकता है कि सहायक नदियों के उद्गम खोजकर उनका वैज्ञानिक अध्ययन करते हुए संरक्षण किया जाये। चाहे गंगा हो या नर्मदा उनकी सहायक नदियों का व्यापक अध्ययन नहीं हुआ है। सहायक नदियां उतनी ही महत्वपूर्ण है जितनी की हमारे शरीर के रूधिर प्रवाह को नियमित करने के लिए शिरायें और धमनियां होती है। बिना वैन और आर्टरी के हम हृदय की कल्पना नहीं कर सकते इसी तरह बिना सहायक नदियों और धाराओं तथा उपधाराओं के बिना किसी भी नदी का अस्तित्व संभव नहीं है।

नर्मदा समग्र का अप्रैल-जून का अंक आपके हाथों में है। 13 मई को विश्व प्रवासी पक्षी दिवस मनाया जाता है। यह दिवस नर्मदा अनुरागियों को इसलिये अवश्य याद रहता है कि इसके ठीक 5 दिन बाद 18 मई 2016 को स्वर्गीय अनिल माधव दवे उस प्रवास पर चले गये थे जहां से कोई वापस नहीं आता। उसके कृत कर्म अवश्य पल्लवित-पुष्पित होते रहते हैं।

अप्रैल से जून की अवधि में यूं तो कई ऐसे महत्वपूर्ण दिवस आते हैं जो पर्यावरण का स्मरण कराते हैं परंतु 22 अप्रैल को मदर अर्थ डे, 20 मई को विश्व मधुमक्खी दिवस, 22 मई को विश्व जैव विविधता दिवस, 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस और 8 जून विश्व समुद्र दिवस आता है। भारत के कुछ हिस्सों में यह अवधि किसानों को अपने खेतों की तैयारी करने की होती है तो कुछ के लिये यह तीर्थाटन और देशाटन का समय होता है। हिम आच्छादित मंदिरों के पट भी खुलना प्रारंभ होते हैं। इन सबके बीच 20 मई विश्व मधुमक्खी दिवस कब गुजर जाता है, पता ही नहीं चलता। हमारे पारिस्थितिकी तंत्र में मधुमक्खियों की भूमिका को रेखांकित करने वाला यह दिवस तमाम कीट-वर्ग की महत्ता भी प्रतिपादित करता है। धरती और पानी को बचाये रखने के लिए हम लगातार सजग रहें इसलिये इन दिवसों का निर्धारण किया गया है। यदि पूरी दुनिया को एक गांव माना जाये तो यह हमारे नये त्यौहार हैं जो मानव को प्रकृति से जोड़ने का काम करते हैं।

अप्रैल से जून में माह में हमने भारत के अधिकांश क्षेत्रों में अनुभव किया कि जलवायु परिवर्तन से होने वाले दुष्परिणाम अपना विकराल रूप दिखाने लगे है। कई क्षेत्रों में बिना मानसून के आई बरसात ने जन जीवन को अस्त-व्यस्त कर दिया। लगातार तापक्रम 40 से 50 डिग्री के बीच में डोलता रहा जिससे मानव की कार्यक्षमता पर नकारात्मक प्रभाव आता है। वैज्ञानिक अध्ययन इस बात की पुष्टि करते है कि तापक्रम 50 डिग्री और उससे अधिक होने पर पेड़ पौधे जीव-जन्तु और मनुष्य सभी की कार्यक्षमता घट जाती है और इस उच्च तापक्रम का प्रभाव लम्बे समय तक बना रहता है। सभी ने अनुभव किया होगा कि जहां जहां असामयिक वर्षा हुई है वहां-वहां जामुन के वृक्षों में समय से पूर्व फलन हो गया और जब जामुन के फल आये तो वे स्वादविहीन थे। जलवायु परिवर्तन एक ऐसा दानव है जो अभी दिखाई नहीं दे रहा परंतु हमारे आने वाले भविष्य में उसके दुष्परिणाम हमें और हमारी अगली पीढ़ी को भोगना होंगे। इसलिए जरूरी है कि भारत के प्रधानमंत्री द्वारा प्रारंभ किये गये लाईफ स्टाइल मिशन के कार्यों को जीवन में उतारा जाये और पृथ्वी के बढ़ने वाले तापक्रम को नियंत्रित किया जाये।

इस अंक में उत्तरप्रदेश के श्री रमनकान्त का एक महत्वपूर्ण लेख है कि किस प्रकार उनके द्वारा गंगा की सहायक 'नीम नदी' का उद्गम खोजा गया। बड़ी नदियों के उद्गम तो गंगोत्री, यमुनोत्री जैसे सर्वज्ञात होते हैं। आज

समय की आवश्यकता है कि सहायक नदियों के उद्गम खोजकर उनका वैज्ञानिक अध्ययन करते हुए संरक्षण किया जाये। चाहे गंगा हो या नर्मदा उनकी सहायक नदियों का व्यापक अध्ययन नहीं हुआ है। सहायक नदियां उतनी ही महत्वपूर्ण है जितनी की हमारे शरीर के रूधिर प्रवाह को नियमित करने के लिए शिरायें और धमनियां होती है। बिना वैन और आटर्री के हम हृदय की कल्पना नहीं कर सकते इसी तरह बिना सहायक नदियों और धाराओं तथा उपधाराओं के बिना किसी भी नदी का अस्तित्व संभव नहीं है। धीरे-धीरे यह बात जनमानस के मन में पैठ बना रही है कि सहायक नदियों पर भी उसी तरह से शोध और विभिन्न संरक्षण कार्य किया जाना चाहिए जिस तरह से मुख्य नदियों पर किये जाते है।

इस अंक में बड़े बांध बनने से छोटे रोजगारों पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों की भी चर्चा की गई है। यह सही है कि विकास के लिए बड़े बांधों का निर्माण अपरिहार्य है। क्योंकि बिजली और सिंचाई इसी तकनीक से संभव है। परन्तु बड़े बांध बनाते समय उन छोटे समुदायों का भी ध्यान रखा जाना चाहिए जो लगातार कई पीढ़ियों से नदियों पर आश्रित रहकर अपनी आजीविका अर्जित करते हैं। मछली पालन करने वाले मछुआरे, सिंघाड़े की खेती करने वाले समुदाय, नदी के बैक वॉटर में खेती करने वाले कृषक, जल आधारित पुष्पों की खेती जैसे कमल की खेती करने वाला समुदाय, नाव से यात्रियों को परिवहन करने वाले लोग आदि ऐसे अनेकों समुदाय हैं जो बड़े बांध बनने के कारण अपनी आजीविका खो देते हैं। इस अंक में इस बाबत भी चर्चा की गई है।

निमाड़ मध्यप्रदेश का एक समृद्ध किन्तु तुलनात्मक रूप से कम ध्यान आकर्षित करने वाला क्षेत्र है। इस अंक में निमाड़ की सामाजिक, सांस्कृतिक उल्लेख करने वाले लेख का समावेश किया गया हैं। इस लेख में श्री अमृतलाल वेगड़ से लेकर सिंगाजी और ज्योर्तिलिंग से लेकर पद्मश्री रामनारायण उपाध्याय तक की चर्चा है। इसमें एक नारी शक्ति मंजू देवी द्वारा जल संरक्षण के किये गये प्रयासों पर भी एक लेख है और यह लेख न होकर वास्तव में सफलता की कहानी है। इसी तरह का एक ओर लेख श्रीमती कमला मीणा का है जो नीर नदी और नारी की संस्कृति को रेखांकित करता है। इस अंक से हम एक नया स्तम्भ 'संस्थापक की लेखनी' से आरंभ करने का प्रयास कर रहे है जिसमें स्व. श्री अनिल माधव दवे द्वारा समय-समय पर लिखे गये लेखों एवं संपादित अंशों का विवरण दिया जायेगा। इस बार 'नर्मदा घाटी में संत परंपरा' लेख से इसका प्रारंभ किया जा रहा है। इसमें उन प्रातः स्मरणीय संतों का उल्लेख है जिनने अपने जीवन का एक बड़ा अंश नर्मदा के तट पर गुजारा है और भारत की संत परंपरा को समृद्ध किया है। जल समाचार शीर्षक से इस बार मध्यप्रदेश का प्रथम राष्ट्रीय जल पुरस्कार मिलने का उल्लेख है जिसके लिए प्रदेश नेतृत्व द्वारा किये गये प्रयास स्तुत्य हैं। नर्मदा सेवी श्री लालाराम चक्रवर्ती ने माँ नर्मदा की उत्तरवाहिनी परिक्रमा का बहुत ही रोचक वर्णन किया है तथा पांच प्रकार की उत्तरवाहिनी परिक्रमा बताई है। मध्यप्रदेश की एक प्रमुख जनजातिय बैगा है जिसके बारे में पिछले कुछ वर्षों से लगातार शोध किया जा रहा है। इस बार बैगा जनजाति के त्यौहारों, विवाह और उनकी जीवन पद्धति की चर्चा की गई है। नर्मदा अंचल के वृक्ष में इस बार तिन्सा वृक्ष का विवरण दिया गया है जो शनैः शनैः वन क्षेत्रों में दुर्लभ होता जा रहा है।

यह अंक कैसा लगा- इसे जानने के लिए अगले अंक से हम पाठकों की प्रतिक्रियाएं जानने के लिए एक नया कॉलम प्रारंभ कर रहे है जिसमें आपकी मूल्यवान प्रतिक्रियाएं आमंत्रित है। पाठकों की प्रतिक्रियाओं में से सर्वश्रेष्ठ प्रतिक्रिया को प्रथम पुरस्कार के रूप में नदी एवं नर्मदा से संबंधित 200 रूपये मूल्य का साहित्य प्रदान किया जायेगा। आशा है कि आपकी सारगर्भित प्रतिक्रिया हमारे आगामी अंकों को और भी समृद्ध बनाने में सहायता प्रदान करेंगी। □

नीम नदी उद्गम का पुनर्जीवन

समाज व सरकार के समन्वय की अनूठी मिसाल

रमनकान्त

(लेखक - रिवरमैन ऑफ इण्डिया संस्थापक - भारतीय नदी परिषद्)

18 मई 2023 को नीम नदी उद्गम किनारे ही 'नीम नदी उत्सव' मनाया गया, जिसमें आस-पास के गांवों के हजारों किसान, सामाजिक संगठन, बच्चे व महिलाएं शामिल हुईं। भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने इस विषय को अपने कार्यक्रम मन की बात के 102 वें भाग में नीम नदी उद्गम पुनर्जीवन के कार्य से पूरे देश का परिचय कराकर जहां हमारा हौसला बढ़ाया है वहीं हमें आगे के कार्य को और अधिक मेहनत, लगन व सतर्कता के साथ करने का संदेश भी दे दिया है। ऐसे में हम अधिक अनुशासन के साथ कार्य को आगे बढ़ाएंगे। भारतीय नदी परिषद के माध्यम से नीम नदी के सम्पूर्ण पुनर्जीवन हेतु रमन नदी पुनर्जीवन मॉडल को लागू किया जा रहा है।

उद्गम खोज यात्रा

5 दिसम्बर, 2019 को जब मैं अपनी टीम के साथ गंगा की प्रमुख सहायक पूर्वी काली नदी का अध्ययन कर रहा था तो कासगंज में जानकारी मिली कि एक अन्य नदी जिसका नाम नीम है, वह भी इसमें मिलती है। इसके बाद हमने नीम नदी की उल्टी यात्रा अर्थात कासगंज से हापुड़ तक की यात्रा प्रारम्भ की। इसमें नीम नदी की जानकारियां व अवशेष जुटाने प्रारम्भ किए लेकिन नदी के उद्गम को लेकर कोई सटीक जानकारी नहीं मिल पा रही थी या यूं कहें कि नदी उद्गम को लेकर बहुत भ्रांतियां थीं। कुछ लोग बताते थे कि यह नदी मेरठ जनपद के परीक्षितगढ़ कस्बे से प्रारम्भ होती है जबकि कुछ जानकारियां इसका प्रारम्भ हापुड़ जनपद से ही बताते थे।

इसके बाद हमने ब्रिटिश गजेटियर, सिंचाई विभाग के दस्तावेज व स्थानीय प्रशासन के सिजरे का सहारा लेकर नदी उद्गम की हापुड़ जनपद में प्रमाणिकता को स्पष्टता के साथ समाज के सम्मुख प्रस्तुत किया। सभी दस्तावेजों में नीम नदी का जिक्र व उसकी जानकारियां मौजूद थीं, लेकिन सिंचाई विभाग के दस्तावेजों में नीम का नाला दर्शाया गया था। इसमें हमनें सैटेलाइट मैपिंग व जीपीएस आदि तकनीक का भी सहारा लिया। नीम नदी का जिक्र पौराणिक किस्से-कहानियों में भी मिलता है। जनश्रुतियों के अनुसार नदी का उद्गम मेरठ जनपद के परीक्षितगढ़ कस्बे से होता हुआ बताया जाता है, जबकि वर्तमान परिस्थिति में सरकारी दस्तावेज सही सिद्ध करते हैं क्योंकि जनश्रुतियां मेरठ जनपद के परीक्षितगढ़ कस्बे से निकलने वाली विलुप्त हो चुकी कोशिकी नदी के संबंध में जानकारी देती हैं जोकि कभी नीम नदी में ही आकर मिल जाती थी। उदगम की प्रमाणिकता का कार्य करीब एक माह तक चला क्योंकि हम सही तथ्य पर पहुंचना चाहते थे। जैसे ही यह तय हो गया कि हां नदी का उद्गम दत्याना गांव से ही था तो हमनें उस स्थान को भी चिन्हित कर लिया जहां पर उद्गम था, लेकिन उस स्थान पर उस समय किसानों द्वारा कृषि कार्य किया जा रहा था।

नदी उद्गम स्थल के निकट से एक रजवाहा बहता है जोकि नदी को दो हिस्सों में बांट देता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि रजवाहा मानव निर्मित है जोकि सिंचाई विभाग द्वारा किसानों के खेत तक नहर का पानी पहुंचाने के लिए बनाया गया है। रजवाहे का तल आज भी नदी तल से ऊंचा है। जाहिर है कि रजवाहा नदी के उद्गम के बीच से ही बनाया गया होगा। रजवाहे के दाहिने ओर नदी की करीब 80 बीघा जमीन है। रजवाहे के बाईं ओर एक विशाल तालाब है, जोकि कभी नदी के जल ग्रहण क्षेत्र का ही हिस्सा रहा है। यहाँ बरसात में आज भी पानी भर जाता है जबकि ग्रामीणों के अनुसार आज से करीब तीन दशक पूर्व तक अत्यधिक जल भराव के कारण यहां खेती करना संभव नहीं था

और नदी में पानी भी पूरे वर्ष बहता रहता था। जैसे-जैसे भूजल स्तर नीचे खिसकता गया तथा औसत वर्षा भी प्रतिवर्ष कम मात्रा में होने लगी तो धीरे-धीरे नदी ने बहना बंद कर दिया।

उद्गम पुनर्जीवन की प्रक्रिया

जब हम पूरी तरह से निश्चिंत हो गए कि नदी का उद्गम दत्याना गांव में ही है तो हापुड़ की तत्कालीन जिलाधिकारी श्रीमति अदिति सिंह से निवेदन किया कि वे इस नदी भूमि का चिन्हांकन करा दें। इसके लिए श्रीमति अतिदि सिंह ने तत्कालीन मुख्य विकास अधिकारी श्री उदय सिंह को हमारे साथ लगा दिया। श्री उदय सिंह ने एक टीम बनाई और जमीन की नापजोख का कार्य प्रारम्भ हो गया। करीब 80 बीघा जमीन चिन्हित की गई। इसके बाद अब बड़ी चुनौती उन किसानों से उस नदी की जमीन मुक्त कराने की थी।

नदी भूमि को कब्जामुक्त कराने हेतु कब्जाधारी किसानों के साथ एक बैठक की गई और उनको इस नदी का महत्व व गौरव बताया गया। दत्याना के निवासियों तक नीम नदी का गौरव पहुंचाने के लिए गांव के नाम एक अपील करता हुआ पत्र लिखा गया। करीब 6 माह की मानसिक रूप से थका देने वाली मेहनत के पश्चात सभी किसान नदी उद्गम भूमि से अपना कब्जा छोड़ने के लिए तैयार हो गए और धीरे-धीरे सभी किसानों ने नदी भूमि से अपना कब्जा छोड़ दिया। इस दौरान हापुड़ के नए जिलाधिकारी के रूप में श्री अनुज झा कार्यभार संभाल चुके थे, लेकिन अच्छी बात यह थी कि मुख्य विकास अधिकारी श्री उदय सिंह ही थे, जोकि इस पूरी प्रक्रिया का हिस्सा थे। किसानों द्वारा जमीन छोड़ने के बाद अब चुनौती वहां नदी उद्गम पर झील निर्माण की हमारे सामने थी। नदी उद्गम के पूरे विषय को नए जिलाधिकारी के संज्ञान में लाया गया। हमनें एक ओर जहां नदी उद्गम को पुनर्जीवित करने का कार्य प्रारम्भ किया वहीं हापुड़ जनपद में बहने वाली नदी की कुल लम्बाई करीब 14.2 किलोमीटर की यात्रा भी की और उसका एक नक्शा तैयार किया। सम्पूर्ण नीम नदी की का नक्शा बनाने के लिए हमनें नमामी गंगे भारत सरकार का सहयोग लिया। नमामी गंगे की एक तकनीकी टीम भी यहां आई और उन्होंने एक नक्शा भी उसका तैयार किया। इस दौरान नदी पुनर्जीवन का अपना प्रारूप हमने समाज व प्रशासन के सम्मुख प्रस्तुत करते हुए श्रमदान व प्रशासन के सहयोग से करने का निर्णय लिया।

इस दौरान मेरठ के नए मण्डलायुक्त श्री सुरेन्द्र सिंह बन चुके थे जोकि स्वयं भी नदी प्रेमी अधिकारी हैं। 7 जून, 2021 को नदी उद्गम पर

7 जून, 2021 को नदी उद्गम पर भूमि पूजन करके समाज व सरकार के सहयोग से नदी उद्गम को पुनर्जीवित करने का कार्य प्रारम्भ किया गया। समाज के सहयोग व श्रमदान का यह कार्य लगातार लगभग 6 माह तक चला। इस दौरान अनेक स्कूलों के बच्चे व सामाजिक कार्यकर्ता भी यहाँ श्रमदान के लिए आते रहे।

भूमि पूजन करके समाज व सरकार के सहयोग से नदी उद्गम को पुनर्जीवित करने का कार्य प्रारम्भ किया गया। इस कार्य में जहां प्रशासन से तत्कालीन मण्डलायुक्त मेरठ सुरेन्द्र सिंह, जिलाधिकारी हापुड़ श्री अनुज झा व मुख्य विकास अधिकारी हापुड़ उदय सिंह अपने मातहतों के साथ शामिल हुए वहीं समाज से किसान, छात्र, सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधि व शूटर दादी श्रीमती प्रकाशी तोमर भी आईं। सामाजिक कार्यकर्ता कर्मवीर सिंह ने इस अवसर पर दस हजार रूपयों का योगदान दिया जिससे कि कुछ दिन मशीन से भी कार्य कराया गया। कुछ कार्य सी.एस.आर. के तहत भी हुआ कराया गया। समाज के सहयोग व श्रमदान का यह कार्य लगातार लगभग 6 माह तक चला। इस दौरान अनेक स्कूलों के बच्चे व सामाजिक कार्यकर्ता भी यहाँ श्रमदान के लिए आते रहे। नदी पुनर्जीवन की आहट से बहुत से समान विचारधारा वाले लोकभारती जैसे अनेक संगठन भी इस कार्य में जुटने लगे। नदी किनारे के गांवों में रोजाना जन-जागरूकता कार्यक्रम किए जाने लगे। सैंकड़ों लोग नदी के साथ जुड़ते चले गए।

हापुड़ जनपद से आगे बुलंदशहर में तत्कालीन जिलाधिकारी रविन्द्र कुमार ने करीब 40 किलोमीटर नदी धारा को चिन्हित कराकर उस पर

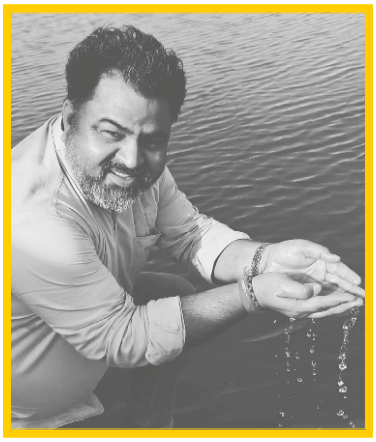

भी कार्य प्रारम्भ कराया था। यहां से कुछ-कुछ कार्य आगे बढ़ता रहा तथा इसी बीच बरसात, कोरोना व गांव पंचायत चुनाव की चुनौती भी आई। क्योंकि कार्य बड़ा था तो उसके लिए अर्थ की आवश्यकता महसूस हो रही थी। ऐसे में श्री सुरेन्द्र सिंह के माध्यम से एक प्रस्ताव लघु सिंचाई विभाग, हापुड़ ने शासन को भिजवाया।

इस दौरान हापुड़ जनपद में जिलाधिकारी श्रीमति मेघा रूपम बन चुकी थीं और मुख्य विकास अधिकारी श्री उदय सिंह के स्थान पर श्रीमति प्रेरणा सिंह बन गई थीं। शासन स्तर से पैसा स्वीकृत होने में करीब एक वर्ष का समय लगा। जब शासन से पैसा मिला तो लघु सिंचाई विभाग द्वारा अपनी निविदा प्रक्रिया के तहत यहां झील निर्माण का कार्य को अन्तिम रूप दिया गया। लघु सिंचाई विभाग व सिंचाई विभाग के साथ लगातार हमारा समन्वय बना रहा। इस झील के निर्माण का कार्यमई, 2023 के प्रथम सप्ताह में जाकर पूर्ण हुआ। इस दौरान पुनः हापुड़ में नई जिलाधिकारी के रूप में श्रीमति प्रेरणा शर्मा ने कार्यभार संभाल लिया था, जबकि मण्डलायुक्त मेरठ श्री सुरेन्द्र सिंह का स्थानान्तरण दिल्ली हो गया था।

नदी परिचय

यह बरसाती नदी है जोकि दत्याना गांव के निचले हिस्से में मौजूद जंगल से होकर बहती रही है। यह नाम के जैसी ही गुणी नदी है। यह हापुड़ जनपद के दत्याना गांव से निकलकर बुलंदशहर व अलीगढ़ जनपदों से होते हुए कासगंज में श्याम बाबा के मन्दिर के निकट करीब 180.2 किलोमीटर की दूरी तय करके गंगा की प्रमुख सहायक पूर्वी काली नदी में समाहित हो जाती है। नीम नदी हापुड़ जनपद में मात्र 14.2 किलोमीटर ही बहती है जबकि इसका करीब 166 किलोमीटर का बहाव क्षेत्र बुलंदशहर, अलीगढ़ व कासगंज जनपदों में है। नदी का सर्वाधिक बहाव बुलंदशहर जनपद में करीब 94 किलोमीटर है जबकि बाकि 72 किलोमीटर अलीगढ़ जनपद में। नदी के कुल बहाव क्षेत्र के निकट करीब 200 गांव बसे हुए हैं, जोकि किसी न किसी प्रकार से नदी से प्रभावित होते रहे हैं।

नीम नदी का नाम नीम कैसे

पड़ा? इसका सीधा व प्रमाणिक जवाब किसी के पास नहीं है लेकिन गांव के बुजुर्ग इसका कारण बताते हैं कि नदी किनारे नीम के पेड़ बहुतायत में थे जिस कारण से ही नदी का पानी औषधीय गुणों वाला था। नीम नदी एक विशेष प्रकार की विशुद्ध गांवों की नदी है। जितने भी गांव नदी किनारे स्थित हैं उनमें से यह नदी तालाबों से यह जुड़ी हुई है। हापुड़ जनपद के मुरादपुर व सैना गांवों में यह नदी तालाब के एक छोर पर जाकर गिरती है तथा दूसरे छोर से पुनः प्रारम्भ हो जाती है जबकि दत्याना व खुराना जैसे गांवों में तालाबों से सटकर बहती रही है। यही इसकी विशेषता है। बरसात के दिनों में गाँवों में होने वाला जल भराव अधिक समय तक नहीं रह पाता था क्योंकि नीम नदी उसे अपने साथ बहाकर ले जाती थी। यूँ तो प्रत्येक बरसाती नदी का गाँव व तालाबों से निकट का संबंध होता है लेकिन नीम नदी का गाँवों व तालाबों से बहुत गहरा नाता है।

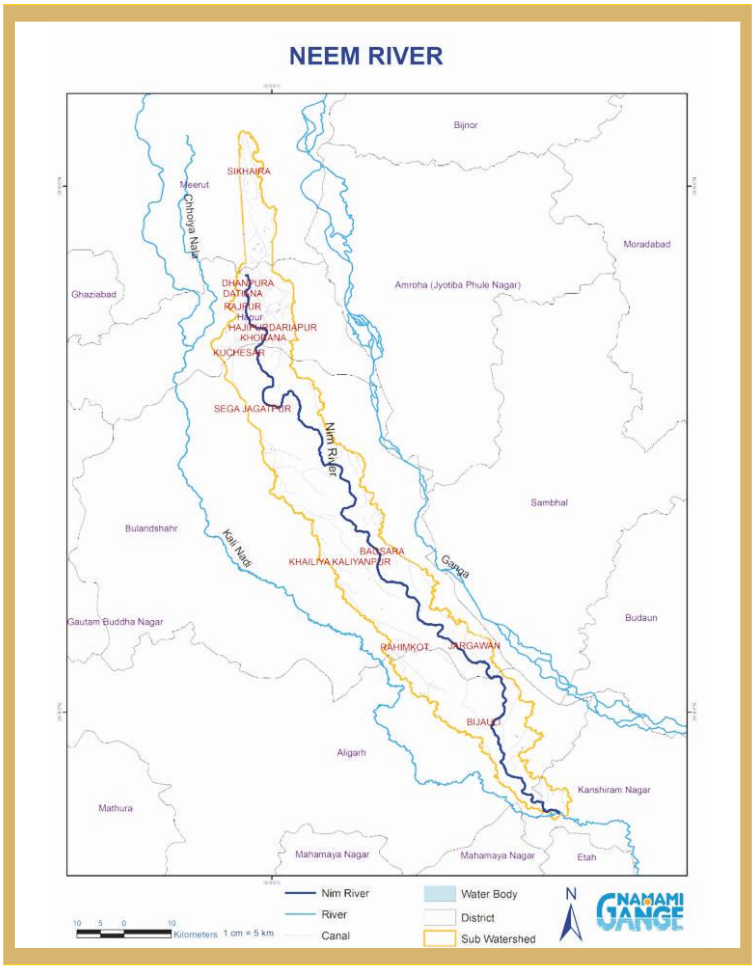

नदी उत्सव

जब नदी उद्गम पर झील निर्माण का कार्य पूर्ण हो गया तो 18 मई, 2023 को नीम नदी उद्गम किनारे ही 'नीम नदी उत्सव' मनाया गया, जिसमें आस-पास के गांवों के हजारों किसान, सामाजिक संगठन, बच्चे व महिलाएं शामिल हुईं। नीम नदी उत्सव में उत्तर प्रदेश के जल शक्ति मंत्री श्री स्वतंत्र देव सिंह व जल शक्ति राज्य मंत्री श्री दिनेश खटीक व जिलाधिकारी श्रीमती प्रेरणा शर्मा, मुख्य विकास अधिकारी श्रीमति प्रेरणा सिंह, शोभित विश्वविधालय के कुलाधिपति श्री कुंवर शेखर विजेन्द्र, जिला पंचायत अध्यक्ष, गढ़-मुक्तेश्वर क्षेत्र के विधायक, लघु सिंचाई विभाग के एस.ई. श्री आलोक सिन्हा व संबंधित विभागों के पदाधिकारी भी शामिल हुईं। इस दौरान नदी उद्गम पर गंगा जल प्रवाहित किया गया।

आगे की योजना

नीम नदी उद्गम पुनर्जीवन के कार्य का करीब 80 प्रतिशत कार्य पूर्ण होने के बाद जहाँ भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने इस

विषय को अपने कार्यक्रम मन की बात के 102 वें भाग में नीम नदी उद्गम पुनर्जीवन के कार्य से पूरे देश का परिचय कराकर जहां हमारा हौंसला बढ़ाया है वहीं हमें आगे के कार्य को और अधिक मेहनत, लगन व सतर्कता के साथ करने का संदेश भी दे दिया है। ऐसे में हम अधिक अनुशासन के साथ कार्य को आगे बढ़ाएंगे।

भारतीय नदी परिषद के माध्यम से नीम नदी के सम्पूर्ण पुनर्जीवन हेतु रमन नदी पुनर्जीवन मॉडल को लागू किया जा रहा है। इस मॉडल के माध्यम से नदी किनारे स्थापित समाज को नदी के कार्यों के साथ जोड़ा जा रहा है जोकि इस कार्य को स्थायित्व प्रदान करेगा। नदी किनारे का समाज अपनी नदी को निर्मल व अविरल बनाए रखे, इस उद्देश्य से वर्तमान में नदी उद्गम से आगे नदी बहाव के किनारे के गांवों में नदी पुनर्जीवन समितियां बनाई जा रही हैं। इन समितियों के माध्यम से 'नीम नदी परिषद' के गठन किया जाएगा।

नदी पुनर्जीवन के इस सम्पूर्ण कार्य में जी.आई.जेड़., जर्मनी की एक संस्था भारतीय नदी परिषद व लघु सिंचाई विभाग के साथ मिलकर सम्पूर्ण सहयोग कर रही है। नीम नदी परिषद को ही अपनी नदी के सभी अधिकार होंगे। यह परिषद ही नदी के सभी निर्णय लेगी। हम नदी किनारे बसे समाज को ही नदी का सच्चा व अच्छा हितैषी बनाने के लिए प्रयासरत हैं।

हापुड़, बुलंदशहर व अलीगढ़ के विभिन्न सामाजिक संगठन, सामाजिक कार्यकर्ता व समाज में विभिन्न व्यवसायों से जुड़े लोग भी नीम नदी पुनर्जीवन के यज्ञ में अपने कर्म ही आहूति देने के लिए जुड़ रहे हैं। हम आशा कर रहे हैं कि आने वाले कुछ वर्षों में हम नीम नदी को पुनर्जीवित करके देश के समक्ष एक मॉडल प्रस्तुत करने में सफल होंगे और माननीय प्रधानमंत्री जी के विश्वास पर खरे उतर पाएंगे। □

आधुनिक तालाब कागज़ों से निकले, थोपे गए और ढलान, बसावट की अड़चनों को नजरअन्दाज कर खोदे गए इसीलिए वो कभी परम्पराओं की बराबरी नहीं कर पाए। भराव के लिए बरसात की आस लगाए ये आज के तालाब हमारे अतीत की परछाई भर हैं, जिन्हें जिन्दा करना आगे का रास्ता तो है लेकिन भटका हुआ सा। बड़ी जरूरत है उन खोये हुए तालाबों को लौटा लाना जिनकी सांसें अब उखड़ने लगी हैं। पेड़, पौधे रोपने का काम को तो जनम, परण, मरण से जोड़कर आगे बढ़ रहा है और अब गोचर की करीब डेढ़ हजार बीघा जमीन का काम भी है। समतल जमीन को गहरा करना और तालाब को जिंदा कर देना आज के दौर के करिश्मे हैं जिनकी पूछ तो होनी चाहिए। जिन परम्पराओं से हमारी पहचान है, जिनमें भीग कर हमें धरती की तरंग का अन्दाज होता रहा है आज उन्हें तस्वीरों से बाहर निकालने का वक्त है।

बूंदों की बांधनी हैं तालाब

डॉ. क्षिप्रा माथुर

(लेखक - दो दशक से पत्रकारिता और पत्रकारिता से जुड़ी पत्रकारिता में कैंपेन एडिटर, अमेरिका के ग्लोबल स्टेट व्यू अखबार की कंसल्टिंग एडिटर)

भूख का बड़ा होना किसी समाज के आगे बढ़ने की निशानी कभी नहीं रहा। लेकिन जहां प्यास बड़ी रही है वहीं जीवन की धारा ने अपना बहाव तेज़ रखा है। देश के करीब साढ़े छह लाख से ज्यादा गांव इस प्यास के साक्षी हैं जहां तालाबों और कुंओं को शामिल कर ही बसावट का खाका खड़े करने की रवायत रही। बहते हुए को बांधने और ठहरे हुए को थामने वाले ये तालाब कहीं सिर्फ स्मृति में बचे हैं तो कहीं जमीन में दबे हुए सिसक रहे हैं। टूटे फूटे तालाबों वाले गांव भी ये जानते हैं कि पुरखों ने इनके भी नामकरण संस्कार किए ताकि हर घर परिवार से उनका रिश्ता उतना ही गहरा रहे जितना इन्सानी बस्ती से। वक्त के साथ जो दरारें समाज में पनपी उसका दर्द तालाबों ने सहा तो खूब मगर कभी कहा नहीं किसी से। तालाबों की अपनी दास्तां लोक परम्पराओं में रची गई, गाई जाती रहीं, निभाई जाती रहीं लेकिन स्मृति से छूट गईं क्योंकि ये तालाब अब लबालब होने की बाट जोहते हुए विकास की मिट्टी को पानी की परतों पर जमते हुए देखते रह गए।

परम्पराओं की बराबरी

बोलियों में बसी गांव की संस्कृति और आस्था ने परम्परागत तालाब भी देखे और आधुनिक दौर में बने तालाब भी। जिन्होंने नई खुदाई की उन्होंने असल में अपनी प्यास को महसूस तो किया लेकिन कुदरत के बनाए पानी के रास्ते वो कहां से खोलते। उन्हें क्या मालूम जहां पानी का ढलान है, जहां सतह के नीचे शिराएं हैं, पेड़ों के झुरमुट से गुजरती हुई मिट्टी की मजबूत पकड़ वाली जमीन है वहीं से पानी अपना रास्ता खोजते हुए तालाबों में आ जाया करता था। बहता हुआ, छनता हुआ, बारह बरस अपनी तहें टटोलता हुआ। देशज ज्ञान और समझदारी ने पानी के कवच को टूटने नहीं दिया कभी। तालाबों को भी ऐसी यांत्रिकी से खड़ा किया, पत्थरों को ऐसे जड़ा और जल धारा के बारीक रास्तों को इतना ध्यान-पूजन में रखा कि पानी के साथ आई मिट्टी-गाद बाहर ही छूटी रही। इसीलिए परम्परा से पनपे तालाब और उसके पानी की कीमत कायम रही। आधुनिक तालाब कागज़ों से निकले, थोपे गए और ढलान, बसावट की अड़चनों को नजरअन्दाज कर खोदे गए इसीलिए वो कभी परम्पराओं की बराबरी नहीं कर पाए। भराव के लिए बरसात की आस लगाए ये आज के तालाब हमारे अतीत की परछाई भर हैं, जिन्हें जिन्दा करना आगे का रास्ता तो है लेकिन भटका हुआ सा। बड़ी

जरूरत है उन खोये हुए तालाबों को लौटा लाना जिनकी सांसें अब उखड़ने लगी हैं।

गोचर, ओरण, तालाब

गांवों की बसावट में गोचर और ओरण, तालाब, खेत बहुरंग जीवन की निशानियां हैं और घर घर पहुंच रहा नल खुशहाली की पहचान। जहां झीलें और नहरें भी हैं प्यास बुझाने के लिए वहां जब नहरें अपना पानी रोक लेती हैं, जब पाइपलाइन में झोंका जाता पानी अपने नखरे दिखाने लगता है तब गांव इन खुले खजानों में झांकने को निकलता है। अफसोस करता है, तकलीफ सहता है लेकिन हौसला नहीं कर पाता। तालाब की ओर ही लौटने की चाह जहां जागी है तो वहज यही कि ये मन से भरे रहते हैं हमेशा क्योंकि इनका बेहद करीबी नाता आस पास बिछी हरियाली से है। ये गोवंश के लिए चारा उपजाने के लिए बेताब रहते हैं, ये देवी देवताओं के नाम पर इन्सानों की दखल से दूर रखी गई जमीनों को आबाद करते हैं और खेतों की नमी का जिम्मा भी उठाए रहते हैं। लम्बे, सूखे, तीखे दिनों में जीवन की आस बचाए रखते हैं। फिक्र वहां भी बड़ी है जो इलाके नगर बन चुके हैं लेकिन वहां की जल-विरासत की परवाह वाली बस्तियां बिखरी बिखरी हैं। सार संभाल कौन करे, किसकी देखरेख हो और किस विभाग का दखल हो, इसका अपना दर्द है। मनरेगा की खुदाई में बेमन से खोदे और साफ किए तालाब के सारे काम सबको मिट्टी होते दिख रहे हैं। विकास का ज्यादा हिस्सा गड्ढों में, तालाब कागजों में और प्यास जहां की तहां।

किल्लत की तहसील

पश्चिमी राजस्थान के फलौदी तहसील भी यही आलम था। अपनी जल-विरासत की अनदेखी ने उस मुहाने पर धकेल दिया जहां कार-टैक्सी स्टैंड पर एक अदद पेड़ की छाया भी मुहैया नहीं थी। मेहनतकश लोगों ने अपनी टैक्सी यूनियन के मार्फत पेड़ रोपने शुरू किए और धीरे धीरे जब इस काम की छांव महसूस होने लगी तो वृक्ष मित्र बनकर अपने इलाके से निकलकर मोक्षधाम में भी सैंकड़ों पौधे रोप दिए। दशक भर पहले शुरू हुए इस काम की महक सबको आने लगी तो डेढ़ सौ लोगों की इस युवा मित्र टीम का ध्यान पानी की तरफ भी गया। सात आठ साल पहले तालाबों को मिलाकर झील बनाने, तालाबों की मरम्मत और घर घर पानी पहुंचाने का जो सरकारी काम शुरू हुआ उसने जागरूक नागरिकों को पानी की दिक्कत महसूस करने की वजह भी दी। पानी और पौधों के बन्धन को मजबूत करने के लिए साल 2016में इलाके के डॉ दिनेश शर्मा ने रानीसर तालाब की खुदाई की अगुवाई की। फिर तो सिलसिला चल पड़ा, 2019 में शिवसर तालाब की पेड़ से घेराबन्दी और चिखलिया तालाब की खुदाई की। अगला काम गुलाब सागर की खुदाई का था। ये खूबसूरत तालाब कभी इलाके भर को तर रखने का दम रखता था। पिछले 60 साल में इसकी साफ सफाई, खुदाई और रखवाली की परवाह किसी ने नहीं की। इलाके के किशन गोपाल ने पहला कदम उठाया और उसके बाद जन जन की मदद से मैदानी हो चुके गुलाब सागर की रंगत बदल गई। तालाब के रास्ते के अति'मण हटाए, जेसीबी मशीनें, ट्रेक्टर, डम्पर लगाकर इसे अपनी असल हालत में लौटाने का बीड़ा उठाया। फोन पर समूह बनाए, बात फैलाई, लोगों को जोड़ा और एक बार 45 दिनों तक लगातार और दूसरी बार 35 दिनों तक खुदाई जारी रहने के बाद तालाब की जान में जान आई। असल सूरत नजर आने लगी।

गुलाबी रंगत

गुलाब सागर पर बने खण्डहर की मरम्मत करने के लिए भी कन्हैया लाल जैसे समाज सेवी आगे आए। मगर जब बड़े पैमाने पर जारी अंधी दौड़ में धरती की कोख को खाली हो रही है तो उसे भरने का जिम्मा सिर्फ नागरिकों का नहीं, सरकारी महकमों का भी होना चाहिए। उनके पास न सोच है, न मन और ना

ही नीतियों का दमखम। करीब पांच सौ परिवारों की आबादी वाले इस इलाके में घर घर खुदे हजारों बोरवैल अब खतरे की दस्तक दे चुके हैं। पानी सात सौ फीट नीचे पहुंच चुका है। जिस इलाके में बूंद बूंद की बचत के लिए घर घर में टांका बना हो वहां इतनी बेपरवाही पसर चुकी है कि बारिश के पानी को संभालने के लिए पहले से कायम तालाबों की तरफ किसी ने देखा तक नहीं। यहां पूरब दिशा में गोचर की ज़मीन है और पश्चिम की ओर की पथरीली आगोर यानी कुदरत के बनाए पानी के रास्तों वाली ज़मीन। इस इलाके में सात आठ छोटे बड़े तालाब थे। चार पांच तालाबों को मिलाकर झील बना दी गई जिसमें पश्चिमी राजस्थान की नहर का पानी रिजर्व में रहता है। यही पानी फिल्टर होकर घर घर बिछी पाइपलाइन से नलों में आता है। लेकिन जब नहर का पानी रोका जाता है तो यहां दो तीन महीने पानी की भारी किल्लत रहती है। इसीलिए जो तालाब झील में मिल चुके उनके अलावा बचे तीन तालाबों को आबाद करने की जरूरत महसूस हुई। तालाबों के आस पास जमीन पर हो चुके कब्जों की वजह से पानी की आवक नहीं थी। चिखलिया, रानीसर और गुलाब सागर आस पास ही थे। इन सबकी खुदाई का जिम्मा रमेश थानवी, दिलीप व्यास, राजेश बोहरा,

मोहन बोहरा, जगदीश गज्जा, रामदयाल थानवी, देवकिशन जैसे नागरिकों ने हाथ में लिया और इसे जन जन का अभियान बना दिया।

लबालब तालाब

तालाबों को आबाद करने के इन कामों में नगर निकाय की मदद बूंद बूंद रही मगर फलौदी की महिला शक्ति समूह, आम नागरिक और समाज के रखवालों ने भरपूर मदद की। इलाके में आई कोविड की आफत के दौरान भी ये संगठित नागरिक और सेवा भारती की टीम खाना, दवाई, ठहरना, ऑक्सीजन के इन्तजाम में लगे रहे और सेवा के काम को पेड़-पानी के साथ निभाई ईमानदारी की तरह ही करते रहे। पेड़, पौधे रोपने का काम को तो जनम, परण, मरण से जोड़कर आगे बढ़ रहा है और अब गोचर की करीब डेढ़ हजार बीघा जमीन का काम भी कुछ महीनों से हाथ में लिया है। मगर समतल जमीन को गहरा करना और तालाब को जिंदा कर देना आज के दौर के करिश्मे हैं जिनकी पूछ तो होनी चाहिए। जिन परम्पराओं से हमारी पहचान है, जिनमें भीग कर हमें धरती की तरंग का अन्दाज होता रहा है आज उन्हें तस्वीरों से बाहर निकालने का वक्त है। बूंद बूंद की बांधनी से सजे तालाबों के सजावट में लगे साथियों को हौसला देना भी समाज के हिस्से का बड़ा काम है। खुले मन और सालों तक बूंद बूंद के लिए खुली अंजुरी से ही सदियों की परम्परा का मान रह पाएगा। □

बड़े बांध जलीय पर्यावरण के क्षरण और नदियों के किनारे मत्स्य पालन पर निर्भर समुदायों की आजीविका के विघटन का प्रमुख कारण बने

मनोज त्रिवेदी

(लेखक- पत्रकार एवं सामाजिक कार्यकर्ता)

भारत का हृदय कहे जाने वाले मध्यप्रदेश में वैसे तो अनेक मन्दिर व देवस्थान है, जो अपनी धरोहर, कलाकृति और पुराण कथाओं के लिए प्रसिद्ध है। ओमकारेश्वर नाम सुनते ही मन एक धार्मिक आस्था जाग जाती है। बारह ज्योतिलिंग में एक ओमकारेश्वर भारत में अपनी अलग पहचान रखता है। ओमकारेश्वर ज्योर्तिलिंग ही नही अपितु उसकी अपनी विरासत, संस्कृति और अलग- अलग प्राचीन मन्दिरों के लिए भी जाना जाता है। पाण्डवकाल से लेकर आज तक अलग पौराणिक कथाओं और परम्पराओं के अलावा भी ओमकारेश्वर को प्रसिद्ध और उसकी महत्ता को बढ़ाती है माँ नर्मदा।

नर्मदा जीवनदायिनी नदी कहीं जाती है कई क्षेत्र में कृषि और पीने के पानी के लिए नर्मदा पर आश्रित है, वही नर्मदा अपनी जैव विविधता और वनस्पति के लिए भी जानी जाती है। नर्मदा नदी का उद्गम स्थल अमरकंटक से निकलकर गुजरात की खंभात की खाड़ी में मिलती है, वह मछलियों के लिए सबसे प्राकृतिक, स्थानों में से एक है। कुछ मछलियां जैसे हिलसा, जंबो, झींगा, सभी किस में मछलियों की नर्मदा में पाई जाती है। ओमकारेश्वर के नर्मदा घाट पर रहने वाले केवट समाज के लिए आजीविका का मुख्य साधन मत्स्याखेट रहता है। उनके पूर्वज भी मछली पालन से ही अपना जीवन यापन करते चले आ रहे हैं।

ओंकारेश्वर में 7 वी पीढ़ी के 57 वर्षीय चमन पिता बुद्धया केवट ने जानकारी देते हुए बताया की ओंकारेश्वर बाँध निर्माण सन् - 2004 के पूर्व बाडिस प्रजाती की मछलियाँ ओंकारेश्वर क्षैत्र में बहुतयात मात्रा में नर्मदा नदी की सतह पर पाई जाती थी।

पहले इंजन नाव नही हुआ करती थी। पर्यटक चप्पू चलित नाव में जब नौका विहार करते थे तब नाव में बैठकर पानी में चने डालते थे तथा मछलियों को देख आनंदित हो ऊठते थे। बाँध बनने के बाद आज गिनी चुनी नाम मात्र की बाडिस, लालपरी, सिंघाल, डोप, गेगरा, बाम, चालर धोधरे, कतला, सिल्वर, बेकडे तथा सुंअर मछली नामक प्रजाती की मछलियाँ बहुत कम देखने मे आ रही हैं।

ओमकारेश्वर स्थित कहार समाज में वर्षो पुरानी किवदंती है कि कहार समाज की महिला के स्नान के दौरान नाक में पहनने वाली नथनी को लाल परी नामक प्रजाति की मछली पानी के अंदर ले गई थी तभी से कहार समाज की महिलाएं नथनी नहीं पहनती हैं। तब से कहार समाज केवट समाज से सिर्फ रोटी व्यवहार करता चला आ रहा है। साल में जून और जुलाई में समाजजन वहा मछली नहीं मारते क्योंकि मछलियां इस समय प्रजननकाल में होती है।

नर्मदा किनारे रहने वाले केवट ही नहीं बल्कि अनेक शोधार्थी द्वारा नर्मदा जल में पाई जाने वाली वनस्पति और मछली पर शोध कार्य किया गया था। विश्वविद्यालय अनुसंधान आयोग के निर्देश पर वर्ष 2015 से लेकर 2019 तक चले शोध में मध्यप्रदेश के होशंगाबाद के

शासकीय महाविद्यालय द्वारा किए गए एक शोध में मछलियों की अनेक प्रजाति खोजी गई। जिसमें 2 दुर्लभ प्रजातियां नर्मदासिस और खर्रा घाट पर नैनडस प्रजाति की मछलियां पाई गई। मध्य प्रदेश की राजकीय मछली का दर्जा प्राप्त महाशीर मछली भी नर्मदा में ही पाई जाती है।

नर्मदा हमारी संस्कृति और सभ्यता और वनस्पति को समेटे हुए हैं। जहां मछलियां रोजगार के रूप में जीवन यापन का साधन है, वही आधुनिक समय में बदलते परिवेश और जीवन शैली में मानव जाति के साथ-साथ पर्यावरण को भी खतरे में डाल दिया है। ओमकारेश्वर बांध के निर्माण होने के बाद आम तौर पर मछलीयों की आबादी पर एक बड़ा प्रभाव पड़ता है। बांध के डाउनस्ट्रीम में पानी की गुणवत्ता परिवर्तन होने से मछलियों की जनसंख्या प्रभावित हुई हैं। हाइड्रोलिक टर्बाइन या स्पिलवे के माध्यम से मछली को अपने पारगमन के दौरान बड़ी क्षति हो सकती है। निर्वहन व्यवस्था या पानी की गुणवत्ता में परिवर्तन भी मछली प्रजातियों पर अप्रत्यक्ष प्रभाव डाल रहे हैं।

प्रवासी मछलियों पर नदी के ऊपर और नीचे की ओर शिकार भी बांधों से जुड़ा हुआ है। नर्मदा घाटी विकास योजना के तहत 30 बड़े और 135 मध्यम तथा 3,000 छोटे बांध प्रस्तावित है। यह नर्मदा और उसकी सहायक नदियों में पाई जाने वाली मछलियों की इन अनगिनत किस्मों को खतरे में डालने वाली परियोजनाएं है। मध्य प्रदेश सरकार एवं स्थानीय निकायों के सहयोग से नर्मदा की स्वच्छता पर अधिक ध्यान दिया जा रहा है।जिससे मछलीयों के जीवन को बचाया जा सके एवं रोजगार के साधनों को बढ़ाया जा सके। हम सभी के प्रयासों से नर्मदा को एक जीवन देने वाली ही नहीं बल्कि उस में निवास करने वाले हर जीव जंतु के लिए जीवनदायिनी नदी के रूप में बनाया जा सके इस प्रकार की जन जागृति की जरुरत हैं। □

कर्तव्यों से विमुख होता समाज

गोपाल प्रजापति

(लेखक - पत्रकार, समाज सेवक एवं नदी एम्बुलेंस के पूर्व समन्वयक)

मनुष्य को बुद्धिमान इसीलिए बनाया है ताकि प्रकृति द्वारा संचालित सृष्टि की व्यवस्था में सहभागिता निभा सके परंतु रक्षक स्वयं ही भक्षक बन कर बैठे है। इसके उपरांत भी लालायित होकर स्वयं के स्वार्थ को लेकर प्रकृति का पुरजोर दोहन करने में हम पीछे नहीं हट रहे है ।

हमारे द्वारा किए जाने वाले कर्म ही हमारे व हमारी आने वाली भावी पीढ़ी के जीवन के गंतव्य की दिशा और लक्ष सुनिश्चित करेंगे। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में ज्वलंत समस्या प्रदूषित होते हुए जल व असंतुलित पर्यावरण की है। इनके संरक्षण को लेकर व्यक्ति, व्यक्ति में सकारात्मक सोच उत्पन्न होगी तभी हम व हमारी भावी पीढ़ी पूर्ण रूप से निरोग रहते हुए सुखी मय जीवन व्यतीत कर पाएंगी। पवित्र नदियों में की गणना में मां रेवा नर्मदा का नाम भी प्रमुखता के साथ पढ़ने में आता है। प्रकृति द्वारा निर्मित सृष्टि की स्वचलित रचना में हमें तो मात्र रखरखाव को लेकर क्षणिक मात्र सहयोग देने की जरूरत है। इस जहां में विभिन्न प्रकार के असाध्य रोग और वैश्विक महामारी फैलने का मुख्य कारण मात्र हमारी निष्क्रियता काही परिणाम है। नदी नालो से रेत उत्खनन किया जाना भी खतरे की घंटी है। जबकी रेत ही पानी का प्राकृतिक फिल्टर प्लांट होती है। साथ ही पेयजल स्त्रोतों के आसपास गंदगी पसरी रहने देना और बिगड़ते हुए पर्यावरण के संरक्षण को लेकर चिंतित नहीं रहना आदि को लेकर हम अपने कर्तव्य से विमुख से होते जा रहे हैं। इसी का दुष्परिणाम आज मनुष्य विभिन्न असाध्य रोगों को अंगीकार कर भुगत रहा है हिंदू धर्म शास्त्र अनुसार 84 लाख योनियों में मानव योनि बडी बुद्धिजीवी और दुर्लभ योनि है। शायद मनुष्य को बुद्धिमान इसीलिए बनाया है ताकि प्रकृति द्वारा संचालित सृष्टि की व्यवस्था में सहभागिता निभा सके परंतु रक्षक स्वयं ही भक्षक बन कर बैठे है। हम जानते है खाली हाथ आए हैं और खाली हाथ ही जाना है। इसके उपरांत भी लालायित होकर स्वयं के स्वार्थ को लेकर प्रकृति का पुरजोर दोहन करने में हम पीछे नहीं हट रहे है ।

अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा समय रहते सचेत हो जाना चाहिए आज हम व आने वाली भावी पीढ़ी की व्यवस्था को लेकर करोड़ों अरबों रुपए की लागत से विशालकाई कालोनिया मल्टी भवन एवं कोठियों का निर्माण करने में जुटे है। जब यह सृष्टि रहेगी नहीं तो यह सब आडंबर ही तो साबित

होंगे। यह व्यर्थ की व्यवस्था है उसका मुख्य कारण है कि जब शुद्ध हवा और पानी (ऑक्सीजन) मिलेगा ही नहीं तो हमारी आने वाली भावी पीढ़ी किस आधार पर इन कोठियों बंगलो का उपभोग कर पाएगी यह प्रश्न अपने आप में वीचारणीय है। अगर भावी पीढ़ी की वास्तव में चिंता है तो निर्माण कार्य में लगने वाली राशि से मात्र 10% राशि से वृक्षारोपण करा दें एसा कार्य कर ने वाला प्रकृति की संचालन व्यवस्था में सहयोग सिद्ध होगा हमारे द्वारा रोपित लंबी उम्र के फलदार वृक्ष से पशु पक्षियों को आहार मिलेगा साथ ही हमें व हमारी आने वाली पीढ़ी को स्वावलंबी बनने हेतु वन उपज जलाऊ व इमारती लकड़ियों के साथ फल फूल और निरोग रहने हेतु औषधियां एवं शुद्ध ऑक्सीजन भी पर्याप्त मात्रा मे मिलता रहेगा।

नर्मदा से जुड़ने वाली नदी एवं नालो में व्यतीत हुए समय काल के दौरान हमेशा अविरल पानी बहता रहता था। वर्तमान के कालखंड में यह सब के सब सूख गए हैं इसका मुख्य कारण है इनके तटीय स्थलों पर वृक्षों की कमी एक समय में लंबी उम्र के बहुतायत संख्या में विभिन्न प्रजाति के वृक्ष (मुसलाधर जड़ के वृक्ष) हुआ करते थे जो भूतल के कई फीट गहराइयों से जड़ों के माध्यम से पानी को खींचते रहते थे और नदी नालों को प्रदाय करते थे।

यही पानी सिर के माध्यम से नदी नालों में अविरल बहता रहता था। आज नदी नाले वर्षा ऋतु के दौरान अल्प समय तक इन में पानी भहता है। पश्चात यह मात्र कंकर और रेत की खदानों में परिवर्तित हो जारहे है। उक्त स्थल से कंकर और रेत को भी माफिया लोगो द्वारा दोहन किया जाता हैं। और हम मूक-बधिर होकर देख रहे हैं। इस घृणित कार्य से प्राकृतिक की स्वचालित योजना नष्ट हो रही हैं। अगर नदी नालों में रेत नहीं रहेगी तो पानी शुद्ध कैसा होगा यह भी अपने आप में एक चिंतनीय विषय है। पर्यावरण संरक्षण व संवर्धन हेतु सनातन धर्म में नदी नाले पोखर विभिन्न प्रजाति के वृक्ष पहाड़ पत्थर कंदरा और यहां तक है कि जीवो में गाय एवं सर्प की पूजा करने का प्रावधान बताया गया है। और सनातन धर्मावलंबी जन आज भी इस अनुक्रम को बखूबी निभा रहे हैं। सनातन धर्म में त्रिवेणी पीपल निम और बरगद एक ही स्थान पर रोहित करने की परंपराएं आज भी प्रचलित है। पीपल वृक्ष 24 घंटे ऑक्सीजन देता है इसके फल को पकने के उपरांत पक्षी बड़े चाहत से खाते हैं। नीम वृक्ष के फलों की उपज से आर्थिक लाभ तो पहुंचता ही है।

आयुर्वेद अनुसार तुलसी एवं नीम के पत्ते नियमित खाने से रक्त शुद्ध होकर चर्म रोग मे लाभ होता है। नीम वृक्ष औषधियों का भंडार होता है आज भी ग्रामीण स्थलों पर मच्छरों के प्रकोप से निजात पाने को लेकर यहां ग्रामीण जन सुबह और शाम पशु बांधने के स्थान पर नीम के पत्तों का धुंआ करते दिखाई देंगे।धुवे की कड़वाहट से मच्छर भाग जाते हैं। इसके फल (निंबोली) से तेल निकाला जाता है इस तेल से अनेक कृषक लोग कीटनाशक दवाइयां बनाकर फसल में छिड़काव करते हैं।

नीम की लकड़ी से बार्कस दरवाजे खिड़की आदि बनवाकर नवनिर्मित भवनों में लगा है नीम की लकड़ी कड़वी होती है और इसे दीमक नहीं खा पाती इसलिए इस की लकड़ी से सोफे कुर्सी टेबल आदि बनवाने की प्रथा ग्रामीण स्थलों पर विद्यमान है शहरी क्षेत्र में अधिकतर लोग इसकी लकड़ी से निर्मित वस्तुओं पर केमिकल लगाकर सागवान के नाम से भी बेचते हैं। नीम वृक्ष आर्थिक लाभ में अहम भूमिका निभाता हैं। वट वृक्ष भी आयुर्वेद में बहुचर्चित है। इस का दूध उपयोगी होता है। सही मायने में अगर सेवा कार्य करना हो तो मां नर्मदा के दोनों तट स्थित बड़ी संख्या में लंबी उम्र के फलदार वृक्षों के पौधों को रोपीत करते हुए संरक्षित व संवर्धन कर मां नर्मदा को हरियाली चुनरी अर्पित करें। □

नर्मदा की धारा से समृद्ध है निमाड़ की साहित्यिक सामाजिक संस्कृति

विजय जोशी 'शितांशु'
(लेखक - महामंत्री, अखिल भारतीय साहित्य परिषद, इकाई, महेश्वर

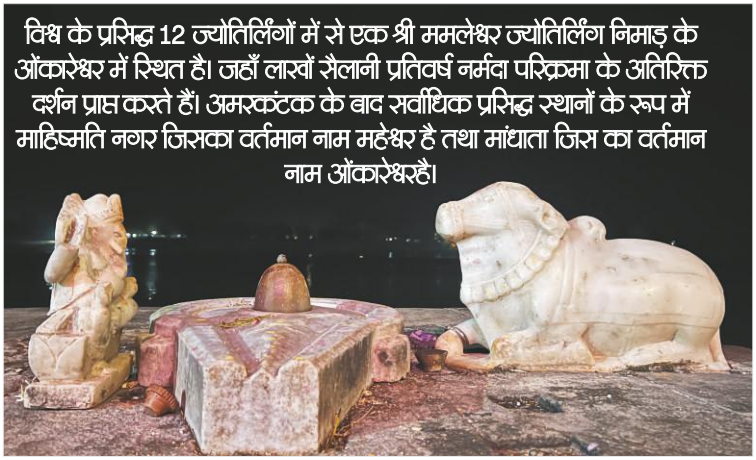

विश्व के प्रसिद्ध 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक श्री ममलेश्वर ज्योतिर्लिंग निमाड़ के ओंकारेश्वर में स्थित है। जहाँ लाखों सैलानी प्रतिवर्ष नर्मदा परिक्रमा के अतिरिक्त दर्शन प्राप्त करते हैं। अमरकंटक के बाद सर्वाधिक प्रसिद्ध स्थानों के रूप में माहिष्मति नगर जिसका वर्तमान नाम महेश्वर है तथा मांधाता जिस का वर्तमान नाम ओंकारेश्वरहै।

माँ नर्मदा का नाम लेते ही अपार श्रद्धा और आनंद से मन भर जाता है। स्कंद पुराण के रेवाखंड में नर्मदा के अवतरण की कथा है कि शिव के श्रम से स्वेद के रूप में नर्मदा का जन्म माना गया है। अलग अलग ग्रंथों में माँ नर्मदा शिव के केश से उद्‌द्भुत होना बताया जाता है। शिव के तप श्रम का फल भी कहा जाता है। जो भी हो शिव से रेवा की उत्पत्ति के कारण ही 'शांकरी नर्मदा' भी इसे कहा जाता है। नर्मदा को पतित पावन अपरा, महानद, बालू वाहिनी, वायु वाहिनी, पापमोचिनी आदि नामों से जाना जाता है। देशभर में नदियों में एकमात्र नर्मदा नदी ही ऐसी नदी है, जिसकी संपूर्ण परिक्रमा की जाती है। माँ नर्मदा की पहली पैदल परिक्रमा करने का उल्लेख मार्कंडेय ऋषि के नाम से आता है। जिन्होंने परिक्रमा ही नहीं की अपितु यात्रा का परिपथ भी तैयार किया और पुराण साहित्य के माध्यम से परि मा का मानक मार्ग तय किया। जब से आज तक यह सिलसिला मुनि जन धन संतान सभी के द्वारा अनवरत जारी है। अनेकानेक संतों, साहित्यकारों, ऋषि मुनियों ने माँ की परिक्रमा का विधान अपने अपने साहित्य में कहा है। श्री अमृत लाल वेगड़ जी ने अपनी पुस्तक में उल्लेख किया। नर्मदा समग्र के अध्यक्ष श्री अमृतलाल जी वेगड़ ने जिलहरी परिक्रमा के साथ साथ एक अखंड संपूर्ण नर्मदा परिक्रमा भी की है, जिसमें उन्होंने सहायक नदियों की भी उद्‌गम तक जाकर अपनी परि मा में उसका समावेश किया है। भारत में नदियों के किनारे सभ्यताओं का विकास हुआ है और नदियों में दक्षिण गंगा के नाम से जानी जाने वाली सप्तकल्प जयी माँ नर्मदा 1310 किलोमीटर लंबी यात्रा में उत्तर भाग पर मध्य क्षेत्र में विस्तार से फैला निमाड़ का उन्नत विशाल भू-भाग जो सतपुड़ा और विंध्याचल के मध्य लगभग 15775 वर्ग मील में है। इसे पूर्व रामायण काल में अनूप जनपद के नाम से जाना जाता था। आज इस में खरगोन, खंडवा, बुरहानपुर और

बड़वानी जिले का संपूर्ण भाग एवं हरदा जिले की खिरकिया, टिमरनी तहसील धार जिले की धरमपुरी, गंधवानी, मनावर, कुक्षी, तहसील है। तथा अलीराजपुर जिले की अलीराजपुर जोबट तहसील को सम्मिलित कर संपूर्ण निमाड़ की परिसीमा का निर्धारण किया गया है । इनके भी मध्य भाग में पश्चिम निमाड़ याने की खरगोन जिला हैं।

जो नर्मदा के उत्तर दक्षिण तटो पर स्थित है। रेवा के लाडले इस निमाड़ के खरगोन जिले में 2011 की जनगणना के आधार पर की आबादी थी। जो वर्तमान में लगभग एक करोड़ हो गई है क्षेत्र में उपजी संस्कृति का पूर्ण आधार नर्मदा जी की कल-कल धारा के साथ तारतम्य मिलाकर चलना ही है। गीत, संगीत, लावणी, काठी, गणगौर, संजा, कलगी-तुर्रा, गम्मत सिंगाजी के भजन सभी में माँ नर्मदा का प्रवाह की झलक निमाड़ की संस्कृति में दिखाई देती है। क्षेत्र का उल्लेख पुराणों में भी वर्णित है। बड़वाह महेश्वर के मध्य गंगातखंडी ग्राम मंन नर्मदा जी के मध्य गंगा जी के पवित्र जल की उपस्थिति आस्था, अध्यात्म एवं प्राकृतिक भौगोलिक अद्भुत रहस्यमयी तथ्य हैं। जो शोध से परे है।

ऐतिहासिक पौराणिक संदर्भ में स्पष्ट उल्लेख है कि माहिष्मती क्षेत्र सहस्त्रार्जुन द्वारा नर्मदा के प्रवाह को रोके जाने और रावण द्वारा शिव पूजा में तल्लीन होने से रोके गए जल स्तर के बढ़ने से रावण की पूजा-आराधना में बाधा हुई थी, और क्रोधित होकर रावण और सहस्त्रबाहु का युद्ध हुआ और इस पराक्रमी भूमि के वीर योद्धा की जीत हुई। रावण हार गया था। वही स्थान नर्मदा के मध्य सहस्त्रधारा के नाम से प्रसिद्ध है ।

नर्मदा तट पर भगवान परशुराम ने कार्तिक वीर्य सहस्त्रार्जुन को अपने पिता की कामधेनु ले जाने और रोकने पर पिता जमदाग्नि की हत्या करने के कारण इसी भूमि पर ललकारा था और छल कपटी सहस्त्रार्जुन को युद्ध में परास्त किया और नर्मदा में उसके मृत्यु का दोष निवारण करने के लिए नर्मदा स्नान कर कैलाश पर्वत की ओर चले गए। वही स्थान परशुराम मंदिर पेशवा घाट महेश्वर में स्थित है।

शूरवीरों की इस पावन धरा को माँ का अपार स्नेह और आशीर्वाद प्राप्त है। धार्मिक मान्यता के आधार पर भी निमाड़ क्षेत्र विश्व के प्रसिद्ध है 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक श्री ममलेश्वर ज्योतिर्लिंग निमाड़ के ओंकारेश्वर में स्थित है। जहाँ लाखों सैलानी प्रतिवर्ष नर्मदा परिक्रमा के अतिरिक्त भी दर्शन प्राप्त करते हैं। साथ ही संपूर्ण नर्मदा परिक्रमा के अवलोकन में अमरकंटक के बाद सर्वाधिक प्रसिद्ध स्थानों के रूप में माहिष्मति नगर जिसका वर्तमान नाम महेश्वर है तथा मांधाता जिस का वर्तमान नाम ओंकारेश्वर (जिला खंडवा) है। जिनका नाम बड़े आस्था और सम्मान के साथ लिया जाता है। नर्मदा पुराण में ओंकारेश्वर में नर्मदा परिक्रमा प्रारंभ करने का विधान कहा गया है, या अन्यत्र कहीं से भी नर्मदा परिक्रमा की यात्रा प्रारंभ करते हैं, तो भी पूर्णता के बाद ओंकारेश्वर के दर्शन से ही परिक्रमा को पूर्ण माना जाता है। और परिक्रमा का पुण्य लाभ मिलता है। यह नर्मदा का प्रवाह ओंकार के आकार में प्राकृतिक रूप से होता है। स्वरूप आकाश मार्ग से दिखाई देता है। यह सभी क्षेत्र निमाड़ में खरगोन जिले की सीमा से चारों ओर से घिरा हैं। अपने गौरव के साथ विद्यमान हैं। और निमाड़ की साहित्यिक संस्कृति को माँ नर्मदा पोषित पुष्पित और पल्लवित कर रही है। आज मां नर्मदा अपनी जलधारा जलराशि के माध्यम से महाकाल की नगरी को भी पोषित करने के लिए पहाड़ों को लाँघते हुए क्षिप्रा के आँचल को हरा भरा करने पहुंच गई है। माँ रेवा से संचित निमाड़ वासियों की माटी ही नहीं वाणी में भी इतनी मिठास है, जितना माँ रेवा के निर्मल पानी में।

यहाँ के तीज त्यौहार में निमाड़ की संस्कृति रेवा के जल की

तरह लोककला बनकर उनकी क्रियाकलापों में देखने को मिलती है। लोक बोली की मिठास और माधुर्यता लोकगीतों, कलगी तुर्रा और सिंगा जी के भक्ति भजनों में नर्मदा का उल्लेख मिलती है। हिंदी साहित्य के भक्तिकाल के सूरदास और तुलसीदास के समकालीन निमाड़ी साहित्य के संत सिंगाजी ने सरस भक्ति गीतों का सृजन रेवा के तट पर ही ग्रामीण अंचलों जनजातीय और बोली के मध्य किया है। निमाड़ में ही सिंगा जी की विशाल समाधि को माँ ने पुत्रवत अपनी गोद में बैठा लिया है। जो दृश्य आज दिखाई देता है। चार कोष अंदर गाँव तक आगमन की प्रार्थना 500 वर्ष पूर्व सिंगा कर चुके थे। समाधि के चारों ओर नर्मदा जल राशि के मध्य सिंगा जी समाधि पर ऐसा प्रतीत होता है। जो परिक्रमा वासियों के लिए आनन्ददायक स्थल है। जो संपूर्ण यात्रा की थकान दूर कर देता है। जन्म स्थल खजूरी भी निमाड़ के राजपुर बड़वानी क्षेत्र में ही हैं।

प्राचीन अनूप जनपद की संस्कृति का अस्तित्व ही वर्तमान में निमाड़ कहलाया है। जिसकी सीमा हरदा की गंजाल नदी से बड़वानी के हिरण पाल तक है। संत मनगीर जी महाराज व संत सिंगा जी ने निमाड़ी के साहित्य की समृद्ध परंपरा की शुरुआत भजनों से इसी क्षेत्र में नर्मदा स्वर लहरियों के साथ की है। खंडवा के राष्ट्रीय कवि दादा माखनलाल चतुर्वेदी जी को कौन नहीं जानता, उनकी शुरुआत भी निमाड़ी से आरम्भ होकर राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित हुई। साहित्य की इसी परम्परा को पद्मश्री रामनारायण उपाध्याय जी ने उन्हीं के साहित्य को आगे बढ़ाते हुए निमाड़ी साहित्य को उच्च कोटि का साहित्यिक स्थान प्रदान किया है। श्रीकृष्ण लाल निमाड़ी भाषा और उसके साहित्य पर पीएचडी की इसी परंपरा को आगे ले जाते हुए पचास साठ के दशक में श्री गौरी शंकर गौरी, बाबूलाल सेन, रामनारायण उपाध्याय बाबूलाल जी पगारे, मधुर जोशी, विष्णु प्रसाद जी करें, नेमीचंद जैन के प्रमुख रचनाकारों के रूप में स्थापित हुए हैं। उन्होंने रेवा के आशीर्वाद से ही माँ के तट पर नर्मदा परिक्रमा यात्रियों की सेवा एवं भक्तिकाल से वर्तमान संदर्भ की सामाजिक समस्याओं को साहित्य के माध्यम से उभारा। आज भी यह निमाड़ क्षेत्र सांस्कृतिक साहित्यिक धार्मिक आयोजनों के माध्यम से नर्मदा उत्सव, मालवा उत्सव, नटराज उत्सव, नदी महोत्सव, के साथ निमाड़ उत्सव में आयोजन में काठी लोक नृत्य, कोरकु, आदिवासी लोक नृत्य, निमाड़ी की गम्मत, रामलीला, गणगौर नृत्य की लंबी फेहरिस्त के माध्यम से आयोजन संपन्न कराता है। नर्मदा के आंचल में बसी रेवा के संस्कारों वहाँ के अपने जन जीवन में पोषित होते देखता है। नर्मदा की परिक्रमा ने 2 राज्यों की एकता को भी आत्मसात किया है। भाषा, बोली, खान-पान रीति रिवाजों की संस्कृति अपने साथ प्रवाहमान किए हुए हैं।

यहाँ मैं उस महान ऋषि पुरुष का नाम भी उल्लेखित करना चाहता हूँ जिन्होंने माँ नर्मदा की संपूर्ण परिक्रमा न कर पाने वाले भक्तों के लिए आंशिक पाँच-पाँच दिवसीय पंचकोशी यात्राओं का आयोजन संपूर्ण नर्मदा के दोनों किनारों पर आरंभ किया है । वह नाम ब्रह्मलीन डॉ. रविंद्र भारती जी उज्जैन का है। जिन्होंने नदी संरक्षण के लिए उत्सव की परंपराओं को अनादिकाल से समृद्ध साहित्य के साथ-साथ जोड़कर जन समुदाय द्वारा जाना समझा और सराहा जा रहा है। जिसमें महेश्वर का निमाड़ उत्सव अपने आप में एक मिसाल है महेश्वर के अखंड किले की धरोहर को देख नर्मदा समग्र के स्वर्गीय अनिल माधव दवे जी ने कहा था- कि नर्मदा महेश्वर में आ कर अपने आप को गौरवान्वित महसूस करती है। यहां आज भी संतों के चरण रज और भक्ति की स्वर लहरियां कल कल रेवा के संग गुंजायमान होती है और निमाड़ वासी रेवा के उस ब्रह्म नाद का अनुभव महसूस करते हैं। □

डगोना जलप्रपात मेला और बैगा समुदाय में विवाह की अनोखी परंपरा जहाँ मेले में किया जाता है जीवनसाथी का चयन

डगोना जलप्रपात जो घने जंगलों के बीच हमें शांति का अनुभव करता है। बैगा समुदाय में विवाह की अनोखी परंपरा है जहाँ मेले में किया जाता है जीवनसाथी का चयन। डागोना का अर्थ है एक ही छलांग में नदी पार करना। बूढ़ी माई का एक मंदिर भी जलप्रपात के पास है। यह स्थल जबलपुर में नर्मदा नदी पर प्रसिद्ध भेड़ाघाट की याद दिलाता है। स्थानीय लोग इसे मिनी भेड़ाघाट भी कहते हैं।

नीलेश कटारे

(लेखक- महाकौशल भाग समन्वयक, नर्मदा समग्र)

डिंडोरी जिले में एक आकर्षक जलप्रपात है डगोना जलप्रपात, जो घने जंगलों के बीच हमे शांति का अनुभव करता है। इस दृश्य को देख कर आपको एक बार इस स्थान में जाने का जरुर मन होगा और यहाँ आप प्रकृति के बीच अपने आपको को पायेंगे। यह एक पिकनिक स्पॉट भी है। इसी क्षेत्र में निवास करने वाली जनजाति बैगा जाति के लिए यह स्थान का बहुत महत्व है, और यह महत्व क्या है?

बैगा समुदाय में विवाह की अनोखी परंपरा है जहाँ मेले में जीवनसाथी का चयन किया जाता है। इस बारे में हम आगे चर्चा करेंगे।

डगोना जल प्रपात बुडनेर नदी पर है। यह नदी डिंडोरी जिले के बजाग विकासखंड के चांडा के समीप के जंगल से निकली है, साथ ही अपनी यात्रा मंडला जिले के मोहगांव विकासखंड के देवगांव संगम में माँ नर्मदा में मिलकर अपना अस्तित्व समाप्त कर देती है। डगोना झरना डिंडोरी से लगभग 85 किमी दूर है जो गौरा और कन्हारी गाँव के बीच बुढ़नेर नदी पर स्थित है। डगोना का अर्थ है एक ही छलांग में नदी पार करना। बूढ़ी माई का एक मंदिर भी जलप्रपात के पास है। यह स्थल जबलपुर में नर्मदा

नदी पर प्रसिद्ध भेड़ाघाट की याद दिलाता है। स्थानीय लोग इसे मिनी भेड़ाघाट भी कहते हैं। अनेको भक्त इस नदी को नर्मदा की नानी कहते है साथ ही इसकी पहली परिक्रमा सुप्रसिद्ध ब्रम्हलीन संत फटती वाले बाबा द्वारा की गई थी ऐसा बताया जाता है उसके पश्चात उनके शिष्यों द्वारा इस नदी की परिक्रमा का क्रम शुरू हुआ जो की आज भी कुछ विरले भक्तों द्वारा की जाति है।

डगोना जलप्रपात

यह मध्यप्रदेश राज्य के डिंडोरी जिले से 65 की.मी. दूर गौरी और कन्हारी गाँव में बुढनेर नदी में स्थित एक सुन्दर और आकर्षक जलप्रपात है। घने वनों के मध्य में स्थित इस स्थान में शांत और मनमोहक स्थान में प्रकृति का आनंद लिया जा सकता है।

डगोना से तात्पर्य एक छलांग में नदी को पार करना (डग=कदम) यहाँ नदी दो चट्टानों के मध्य में बहती है जिसे एक कदम में पार किया जा सकता है इसलिए इसका नाम डगोना पड़ा।

इस स्थान में बुढ़नेर नदी के पानी का बहाव अधिक होने से समय के साथ धीरे-धीरे पहाड़ी और मिटटी में लगातार क्षरण होता रहा और इस वजह से गहरी संकरी नाली के सामान आकृति का निर्माण हो गया और नदी मे कुछ जगहों में छोटे झरने भी बन गए है, इसी स्थान में कहीं-कहीं अधिक ऊचाई होने से नदी का तेज कभी कभी खतरनाक दिखाई आता है। स्थानीय लोगों ने इस स्थान को मिनी भेड़ाघाट की संज्ञा दी है। इस स्थान के निकट ही बूढी माँ का मंदिर है, जिसकी पूजा करने लोग यहाँ आते है। बैगा समुदाय में विवाह की अनोखी परंपरा जहाँ मेले में किया जाता है जीवनसाथी का चयन।

डगोना जलप्रपात मेला

डिंडोरी और आस-पास के जिले में बैगा जनजाति अधिक निवास करती है। इन जिले में प्रतिवर्ष मेला-मड़ई आयोजित होती रहती है। जिनका अपना एक महत्व होता है और बैगा जनजाति के लोग इस मेला-मड़ई में पहुंचकर इन आयोजनों के महत्व को बढ़ाते है और आनंद लेते है। इसी तरह का एक मेला जिले के डगोना में भरता है और इसका आयोजन 1968 से हो रहा है। बैगा समुदाय में विवाह की अनोखी परंपरा है जहाँ मेले में जीवनसाथी का चयन किया जाता है।

डगोना बैगा बाहुल्य क्षेत्र है। इस मेले में डगोना और कन्हारी गाँव के अतिरिक्त डिंडोरी और डिंडोरी से लगे हुए अन्य अजगर, ढाबा, गोरा कन्हारी से भी लोग इस मेले में शामिल होने आते है। इस मेले का आयोजन मकर संक्राति के अवसर में होता है, कुछ अन्य जानकारी से ज्ञात होता है की इसका आयोजन प्रतिवर्ष शिवरात्रि के दुसरे दिन किया जाता है। बैगा लोग डाँग जोकि मोरपंख से सुसज्जित, लेकर मेले में घूमते है और अपने देवी-देवताओं की पूजा करने के पश्चात उसी डाँग से मेले में सभी का स्वागत करते है।

बैगा जनजाति के युवाओं के लिए इस मेले का एक अलग महत्व होता है इसलिए यहाँ युवक-युवतियों के भीड़ रहती है। इस बैगा मड़ई में बैगा युवक और युवतियां भागकर शादी करते है बैगा जाति में युवाओं (युवक-युवतियों) को अपना जीवनसाथी चुनने की आजादी होती है शादी की इच्छा रखने वाले युवक-युवतियां इस मेले का वर्ष भर इंतजार करते है। इस मेले में आकर ही अपना जीवनसाथी पसंद करते हैं। यहाँ पर युवक अपने पसंद की कन्या को पान खिलाकर या गाना गाकर प्रभावित करता है। अगर कन्या पान खा लेती है या प्रभावित हो जाती है तो वह युवक उसे भगा ले जाता है और इसके बाद परिवार वाले उन्हें बुलाकर उनकी शादी कर देते है।

बैगा समाज को पिछड़ी जनजाति वर्ग में गिना जाता है किन्तु तथाकथित हमारा सभ्य समाज के रूढ़िवादी सोच से आगे बढ़कर ऐसी संस्कृति और परंपरा का उदाहरण प्रस्तुत करते है, जिसमे लाखों रूपए

खर्च न करके, भोजन की बर्बादी को रोककर सभी गाँव वाले मिलकर शादी में भोजन और शादी का खर्च उठाते हैं बैगा जनजाति की यह अनोखी प्रथा आज भी प्रचलित है। बैगा जनजातियों में महिलओं को अपना वर चुनने का अधिकार दिया गया है साथ ही महिलओं का सम्मानजनक स्थान दिया जाता है।

बैगा जनजाति की विवाह संस्कृति

बैगा जनजाति मध्यप्रदेश की सबसे पिछड़ी आदिम जनजाति में से एक है। यह मध्यप्रदेश की तीसरी बड़ी जनजाति है, इन्हें धरतीपुत्र या पिछवार से संबोधित किया जाता है। बैगा जनजाति मध्यप्रदेश के पूर्वी जिले डिंडोरी, मंडला और बालाघाट में निवास करती है। अधिकतर आदिवासी समुदाय में महिलाओं को सम्मानजनक स्थान प्राप्त है।

बैगा समाज में लड़के और लड़कियों के मध्य कोई भेदभाव नहीं किया जाता है। दोनों को समान रूप से प्रेम विवाह की आजादी है। यहाँ लडकियों को स्वयं जीवनसाथी चुनने की स्वंत्रता होती है। बैगा समाज में मुख्यतः 6 प्रकार के विवाह प्रचलित है-

1. उधरिया विवाह
2. पैठुल विवाह
3. लमसेना विवाह
4. चोर विवाह
5. उठवा विवाह
6. पठोनी विवाह

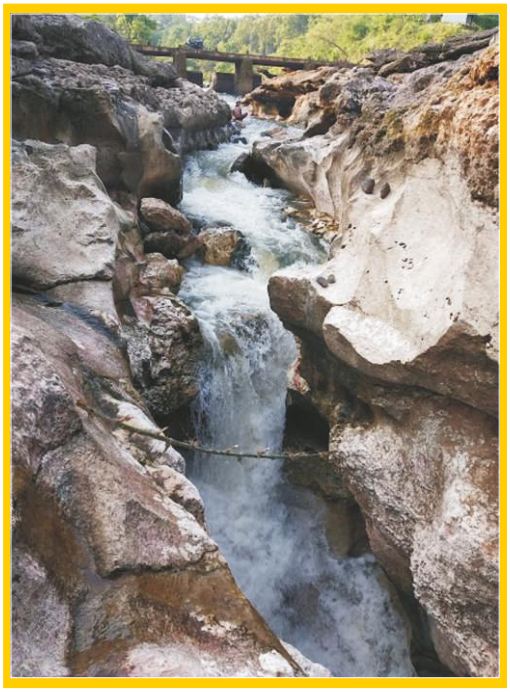

मध्यप्रदेश राज्य के डिंडोरी जिले से 65 की.मी. दूर गौरी और कन्हारी गाँव में बुढनेर नदी में स्थित एक सुन्दर और आकर्षक जलप्रपात है डगोना से तात्पर्य एक छलांग में नदी को पार करना (डग=कदम) यहाँ नदी दो चट्टानों के मध्य में बहती है जिसे एक कदम में पार किया जा सकता है इसलिए इसका नाम डगोना पड़ा।

उधरिया विवाह

बैगा जनजाति में यह पुनर्विवाह की पद्धति है, जिसमे शादीशुदा महिला अपने पति को छोड़कर किसी और से शादी करने का निर्णय लेती है, और वह अपने पति को छोड़ कर दुसरे आदमी के घर में घुस जाती है। इसके बाद पंच इकट्ठा होते है और उस महिला पर होने वाले देवर द्वारा एक लोटा गर्म पानी डाला जाता है, इसका मतलब है की वह महिला अब पवित्र हो गई है।

अगले दिन पंचो को शराब पिलाई जाती है। पहला पति दुसरे पति से हर्जाना वसूल करता है, जिसे दावा कहते है। हर्जाने के रूप में 200 रू. नकद और गाय-बैल भी शामिल होते है। दावा चुकाने के बाद दोनों पक्षों में मिलौकि होती है और खपरे पर एक-एक रू. घास और कच्चा धागा रखकर पंचो के सामने खपरे को तोड़ देता है जिसका अर्थ संबंधो का टूटना है।

पैठुल विवाह

बैगा जनजाति के इस विवाह में कुंवारी युवती अपने पसंद के लड़के से शादी करने के लिए उस लड़के के घर में, घर के पीछे से चुपचाप घुस जाती है और लड़के के उपर हल्दी चावल छिड़क

देती है, जिसका मतलब है की लड़की ने लड़के को पसंद कर लिया है। इसके बाद लड़के का पिता गाँव के प्रमुख लोगों को इस बात की जानकारी देता है की अमुक लड़की हमारे घर में पैठुल हो गई है। इसके बाद लड़की को बुलाकर कर दोबारा उसकी इच्छा पूछी जाती है, उसके जेवर की जाँच की जाती है और उसके बाद घर के आँगन में मंडप लगाकर तुरंत भंवर कर दी जाती है। बाद में लड़की के घर खबर भेजी जाती है खबर मिलने के बाद लड़की के पिता लड़के के घर पहुंचकर शादी की तारीख तय करते है।

चोर विवाह

प्रेम विवाह का प्रचलन बैगा जनजाति में अधिक है। जिसे चोर विवाह, या ले भगा ले भगी विवाह भी कहते है। इसमें लड़का-लड़की अपनी मर्जी से भाग जाते हैं और अपने दोस्त के हाथ अपने घर खबर भेज देते हैं की हम लोग इस समय इस जगह पर मिलेंगे। खबर मिलने के बाद दोनों के माता-पिता उस जगह पहुंच जाते हैं और उन्हें मनाकर घर ले आते है और पुरे रस्मो-रिवाज से दोनों की शादी करवा दी जाती है।

उठवा विवाह

उठवा विवाह का पूरा खर्च लडके वाले उठाते हैं। इसमें लड़की पक्ष के लोग लड़के वालों के घर पहुंच कर वही सगाई, शादी आदि की तारीख तय कर निश्चित तिथि पर सभी रस्मों से विवाह संपन्न होता है।

पठोनी विवाह

इस विवाह में लड़की द्वारा बारात लाई जाती है।

लड़की पक्ष के लोग बारात लेकर लड़के के घर जाते हैं वही मंडप में विवाह संपन्न होता है और बाद में दुल्हे को विदाकर वापस अपने घर आ जाते है। इसे 'चढ़' विवाह भी कहते है।

लमसेना विवाह

यह एक सेवा विवाह है। इस विवाह में युवक कन्या के घर जाकर सामान्यतः 1 से 2 वर्ष अपनी शारीरिक क्षमता का परिचय देना होता है। लड़का लड़की के पिता के कार्य में हाथ बटाता है, अगर लडंकी के पिता उसके कार्य से खुश होते हैं, तो एक वर्ष के अन्दर विवाह कर दिया जाता है और वह दोनों विवाह पश्चात अपने घर चले जाते है। □

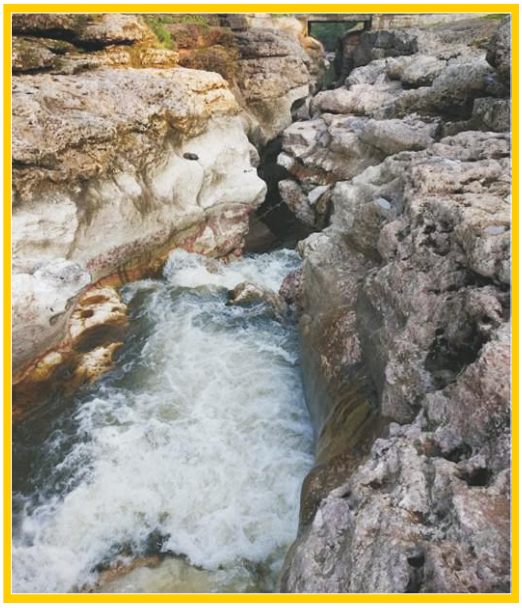

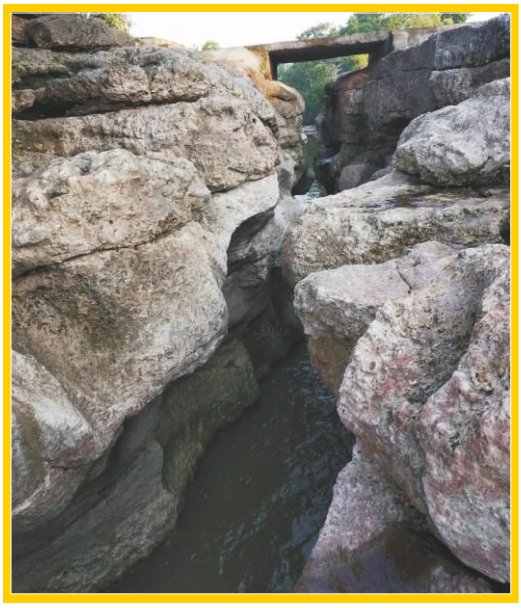

तिन्सा

(तिनस, संदन, काला पलाश)

वानस्पतिक नाम - Desmodium Oojeinense Syn. Oojenia Oojeinensis

फैमिली - Faboideae - मटर की फैमिली

डॉ. सुदेश वाघमारे

(लेखक - सेवानिवृत उपवनसंरक्षक, मप्र राज्य वनसेवा। नगरीय पौधारोपण, वन्यप्राणी, प्रबंधन, जलसंरक्षण, और जैव विविधता में विशेषज्ञता तथा सुदीर्घ मैदानी अनुभव। संप्रति- स्वतंत्र लेखक और भारत शासन के वन एवं पर्यावरण मंत्रालय की क्षेत्रीय साधिकार समिति के सदस्य)

यह वृक्ष उज्जैन के आसपास के वन क्षेत्रों में बहुत पाये जाते थे। इसके वानस्पतिक नाम में अजेन्सिस इसी का द्योतक है। ऐसा कहा जाता है कि उज्जैन के राजनिवास और मंदिरों के निर्माण में इसकी इमारती लकड़ी का उपयोग हुआ है। यह अलग बात है कि वर्तमान में न उज्जैन में जंगल बचे है और न तिनसा के पेड़ बचे हैं।

इसमें पलाश की तरह तीन पर्णक पाये जाते हैं इसलिए इसे 'तिन्सा' (तीन पत्ती वाला) कहते हैं। यह मध्यम आकार का और घने छत्र वाला वृक्ष है। फरवरी-मार्च में पर्णपातन होता है और वृक्ष, सफेद फूलों से लद जाता है। अप्रैल के महिने में जब नई तांबे के रंग की पत्तियां आती हैं तो यह देखने में सुन्दर लगता है। आसपास की भूमि में इसे रूट सकर (मूल अन्तः भूस्तारी) निकलते हैं जो कालान्तर में स्वतंत्र वृक्ष बन जाते हैं। इसकी इमारती लकड़ी बहुत काम आती है इसलिए वन क्षेत्रों में इसकी संख्या कम होती जा रही है।

छाल - भूरे रंग की, पपड़ी दार

पत्तियां - एक लम्बे पर्णवृन्त पर तीन, पत्रक होते हैं। मध्य का पत्रक शेष दो पत्रकों से आकार में बड़ा होता है। इसकी पहचान करने का यह सबसे सरल उपाय है। पत्तियों को पशु चाव से खाते हैं।

पुष्प - हल्के सुगंधित पुष्प सफेद रंग के गुच्छों में आते हैं।

फल - चपटी फूली होती है जिसमें 3-4 बीज होते हैं। प्रायः मई-जून में पकते हैं।

औषधीय उपयोग - इसमें होमो-फेरिरिन, आऊजेनिन एवं टैनिन रसायन पाये जाते हैं।

गोंद - उदर रोगों में।

छाल - उदर रोगों में। मछलियां मारने के लिए।

पत्तियां - पशु चिकित्सा में।

जड़ - नेत्र चिकित्सा में। □

वाल्मीकी रामायण में जिन 184 वनस्पतियों का उल्लेख आया है उनमें तिन्सा भी है। यह दर्शाता है कि तिन्सा देशज प्रजाति है। पशु इसके पत्ते चाव से खाते हैं और मनुष्य के लिये यह श्रेष्ठ इमारती लकड़ी रहा है, अतः इस प्रजाति का तेजी से विनाश हुआ है। इंटरनेशनल यूनियन फॉर कन्जर्वेशन ऑफ नेचर (IUCN) ने तिन्सा को खतरे के नजदीक (Near Threaten) माना है। यदि इसकी फली के बीज को जून माह में बो दिया जाये तो आसानी से अंकुरित हो जाता है। इसके आर्थिक महत्व को देखते हुए जागरूकता और संरक्षण की आवश्यकता है।

नर्मदा घाटी में संत परंपरा

नर्मदा साधना व कर्म स्थली रही है। भारतीय संतों के अलावा विदेशी संतों ने भी नर्मदा तट को अपनी साधना व शोध केन्द्र के रूप में चुना है। नर्मदा घाट घाट पर मंदिर की घंटी, साधकों की चौपाल और साधु-संतों का जमावड़ा आदि काल से निरंतर है। लोक विचार है कि नर्मदा के किनारे तो कमण्डल से कमण्डल लगा हुआ है।

नर्मदा गंगा से भी प्राचीन है। स्कंद पुराण के रेवाखण्ड में उल्लेख है कि 'प्रलयकारी सूखे के समय नर्मदा ने ही पृथ्वी पर जीवन दिया।' नर्मदा जप, तप और अध्यात्म का आधार है। इसके घाट-घाट पर मठ, आश्रम और मंदिर है। इसके तट पर ऋषि, मुनि, संत, योगी, तांत्रिक, परिव्राजक, उपदेशक सदियों से निवास कर रहे हैं और आज भी यहाँ परंपरा है। साधु-संन्यासियों, गृहस्थों, साधकों की टोलियाँ, दंड-कमंडल और झोली लिये यहाँ-वहाँ दिखाई देती हैं। हिन्दू दर्शन के प्रणेता आदि गुरु शंकराचार्य, उनके गुरु गोविंद भगवताचार्य साधु- और उनके भी गुरु गोडपादाचार्य ने नर्मदा तट पर साधना कर अपनी आध्यात्मिक चेतना को विस्तार दिया। आदि गुरु शंकराचार्य ने ओंकारेश्वर स्थित साँकल घाट पर नर्मदा अष्टक की रचना की।

कहते हैं- 'रेवातीरे तपम कुर्यात' यदि तप करना है तो नर्मदा के तट पर करो। भारतीय ऋषि-मुनियों ने इसका अक्षरशः पालन किया। नर्मदा का उद्गम स्थल मार्कण्डेय व भृगु ऋषि की तपोभूमि रही तो शांडिल्य ऋषि ने सांडिया घाट पर तपस्या की, भृगु ऋषि ने भेड़ाघाट व भरूच में साधना की। ओंकारेश्वर को कोच्चायवन ऋषि ने साधना स्थली बनाया, ओंकारेश्वर मांधाता क्षेत्र में श्रीमायानंद चैतन्य ने नर्मदा तट पर अनेक रचनाएँ की जिसमें गीतोपनिषद् चमत्कार, निर्णय नर नारायण, सर्वांग योग आदि उल्लेखनीय है। स्वामी लाल प्रकाशजी ने अनेक बार नर्मदा परिक्रमा कर पद्मीचार की स्थापना की और धूनी वाले बाबा केशवानंदजी का उपनयन संस्कार किया। मंडला के स्वामी सीतारामदास ने नर्मदा के इस पावन घाट को अपनी तपोभूमि बनाया। आश्रम स्थापित किया और यहीं शरीर त्याग ब्रह्मलीन हुए।

नर्मदा किनारे प्रसिद्ध संत तुकड़ी महाराज ने भजन मंडली संग भक्ति भाव की अलख जगाई तो पंडित बैरागी मोहनदास त्यागी ने रामभक्ति से कछार को गुंजाया। नाम संकीर्तन परंपरा शुरू कर होशंगाबाद जिले के धनवाड़ में साधना की। स्वामी कमल भारतीजी ने मण्डलेश्वर, ओंकारेश्वर में तप किया। श्री गौरीशंकर महाराज ने जीवन भर नर्मदा की परिक्रमा व शोध किया और नर्मदा क्षेत्र की जड़ी-बूटी के ज्ञाता बने स्वामी केशवानंद (धूनी वाले बाबा) ने शूलपाण की झाड़ियों में घोर तपस्या की वहीं बर्फानी बाबा कल्याणदास महाराज ने इसी पावन भूमि पर साधना की। पशु-पक्षियों की बोली समझने वाले हठयोगी मौनी बाबा ने 12 वर्षों तक मौन रहकर नर्मदा परिक्रमा व साधना की। वेद, उपनिषद् व योग के ज्ञाता स्वामी वासुदेवानंद (टेबे बाबा) ने नर्मदा तट पर तप किया योगी मीमांसा के लेखक माधवदास बाबा (मालसर), गीता मंदिर के संस्थापक वैदिकाचार्य विद्यानंद (कर्नाली), भजनानदी रामबाई (मोरटक्का), गौसेवक ओझा महाराज, बंगाली महाराज (खेडीघाट), मूंगफली वाले बाबा (नेमावर), स्वामी गोपालतीर्थ महाराज (किटीधार). नारेश्वर के साधक रंग अवधूत महाराज आदि महान संतों की नर्मदा साधना व कर्म स्थली रही है। भारतीय संतों के अलावा विदेशी संतों ने भी नर्मदा तट को अपनी साधना व शोध केन्द्र के रूप में चुना है। नर्मदा घाट घाट पर मंदिर की घंटी, साधकों की चौपाल और साधु-संतों का जमावड़ा आदि काल से निरंतर है। लोक विचार है कि नर्मदा के किनारे तो कमण्डल से कमण्डल लगा हुआ है। □

(साभार - नर्मदा समग्र Rafting through a civilisation A TRAVELOGUE)

माँ नर्मदा उत्तरवाहिनी परिक्रमा

लालाराम चक्रवर्ती
(लेखक-परिक्रमा आयाम समन्वयक, नर्मदा समग्र न्यास भोपाल)

माँ नर्मदा उत्तरवाहिनी परिक्रमा क्या है ?

पतित पावनी जगत तारिणी माँ नर्मदा जिस स्थान पर उत्तर दिशा में प्रवाहित होती हैं, उस क्षेत्र को उत्तरवाहिनी कहते हैं। जिस तरह मुण्डमाल परिक्रमा में किसी एक स्थान से नर्मदा मैया को दाहिने हाथ पर रखते हुये चलते हैं उसी प्रकार यहाँ पर भी जिस स्थान से प्रारंभ करते हैं वहीं पर समापन का विधान हैं। पूर्ण परिक्रमा के समान उत्तरवाहिनी परिक्रमा में दोनों तटों पर चलना होता हैं। उत्तरवाहिनी के दोनों छोर पर तट परिवर्तन नाव से या पुल जो साधन हो उससे करना पडता हैं। जिस तरह परिक्रमा का विधान होता हैं कि मैया का जल एक पात्र या छारी रखकर संकल्प लेना चाहिये।

उत्तरवाहिनी का महत्व -

स्कंध पुराण, मतस्य पुराण, वायु पुराण, पद्मपुराण और भृगु संहिता में वर्णित रेवाखंड के श्लोक में वर्णन आता हैं कि मार्कण्डेय मुनि जी ने युधिष्ठिर सहित पाण्डवों और कुछ देवताओं को उत्तर दिशा की ओर प्रवाहित हुई नर्मदा जी के स्थानों का महत्व कहां हैं। चैत्र मास में उत्तरवाहिनी माँ नर्मदा परिक्रमा करने से सम्पूर्ण परिक्रमा का फल प्राप्त होता हैं।

''त्वदीचि नर्मदायत्र, प्रतिची यत्र जान्हवी।''
वैत्रगच्छन्त को श्रेष्ठ, प्राचीयन सरस्वती।।

अर्थातः- जहां नर्मदा उत्तरवाहिनी, गंगा पश्चिमवाहिनी और सरस्वती पूर्व वाहिनी होती हैं, तो वह क्षेत्र धर्मपारायण होता हैं।

''यत्रास्ते भगवान विष्णु रेवा च उत्तरवाहिनी।''
तत्र स्नानार्थ महाराज,
वैष्णव लोक मां पूर्यातू।।

अर्थातः- जिस स्थान पर मां रेवा उत्तरवाहिनी प्रवाहित हुई हो और भगवान विष्णु उत्तराभिमुख हो। हे महाराज वहां स्नान करने से विष्णुलोक की प्राप्ति होती हैं।

माँ नर्मदा उत्तरवाहिनी कहाँ-कहाँ है

नर्मदा मैया अमरकंटक उद्गम

स्थल से सागर संगम तक अनेकों स्थानों पर उत्तर दिशा होकर प्रवाहित हैं। जिस स्थान पर विशेष यज्ञ अनुष्ठान या तप किया गया हो ऐसे स्थान पर मैया उत्तरवाहिनी प्रवाहित हुई।

जहाँ पर नर्मदा मैया कम से कम दो कोष से अधिक उत्तरवाहिनी प्रवाहित हो तो उसका महत्व अधिक हो जाता हैं। अमरकंटक से सागर संगम तक ऐसे 5 स्थान हैं, जहां मैया दो कोष से अधिक उत्तरवाहिनी प्रवाहित होती हैं जिसमें से अधिक महत्व के 3 स्थान हैं। इन सभी उत्तरवाहिनी प्रवाह में सबसे अधिक प्रचलित उत्तरवाहिनी पद परिक्रमा गुजरात राज्य के रमपुरा गांव से तिलकवाडा तक हैं। यहाँ की उत्तरवाहिनी परिक्रमा के समय इस वर्ष पूरे चैत्रमास में लगभग 5 लाख से अधिक लोगों ने परिक्रमा की हैं।

1. प्रथम उत्तरवाहिनी -

डिंडौरी जिले में गीधा गांव के पास गोमती संगम से शीषघाट तक नर्मदा मैया लगभग 5-6 कि.मी. उत्तरवाहिनी प्रवाहित होती हैं। यह उत्तरवाहिनी अभी जानकारी न होने से प्रचलन में नहीं हैं।

2. द्वितीय उत्तरवाहिनी -

यह उत्तरवाहिनी प्रवाह भी डिंडौरी जिले में सक्का ग्राम के पास खरमेर नदी संगम के बाद से मालपुर घाट के पास तक हैं। इस प्रवाह की लम्बाई लगभग 8-9 कि.मी. हैं।

3. तृतीय उत्तरवाहिनी -

यह उत्तरवाहिनी मंडला जिला मुख्यालय में स्थित महाराजपुर त्रिवेणी संगम से घाघी ग्राम तक एक तट की लम्बाई 20 कि.मी. हैं। इस उत्तरवाहिनी के दोनों तटों की लम्बाई कुल 42 कि.मी. होती हैं, अतः कम से कम दो दिन में संभव हैं। यह उत्तरवाहिनी पिछले 2 वर्षों से लोगों की जानकारी में आने से चैत्र माह में उत्तरवाहिनी पद परिक्रमा करने वालों की संख्या में वृद्धि हुई हैं।

यह उत्तरवाहिनी को महिष्मती माँ नर्मदा व्यास दंड उत्तरवाहिनी पद परिक्रमा नाम दिया जाता हैं। यहाँ की आयोजन समिति ने तिलकवाडा गुजरात की उत्तरवाहिनी श्रद्धालुओं के जनसैलाब को देखते हुये, अभी से तैयारियाँ प्रारंभ कर दिया हैं ताकि अन्य प्रांतों से आने वाले श्रद्धालुओं को दिक्कत न जायें और अधिक तीर्थों का महत्व जान सके।

समिति के माध्यम से महिष्मति मंडला के पास स्थित व्यास नारायण मंदिर, माँ सरस्वती का प्रस्त्रवण तीर्थ, घृतनाला एवं सहस्त्रवर्णी तीर्थ को यात्रा मार्ग में शामिल किया हैं। यहां के लोगों का मानना हैं कि आने वाले समय में इस उत्तरवाहिनी का प्रचार होने से चैत्रमास में लाखों संख्या में श्रद्धालुजन आयेंगे।

4. चतुर्थ उत्तरवाहिनी -

यह उत्तरवाहिनी प्रवाह इंदिरा सागर पुनासा बांध जिला खंडवा में आता हैं जो कि अब जलमग्न हो गया हैं। यह उत्तरवाहिनी भी अधिक महत्व की थी पर इसे पैदल नहीं किया जा सकता है।

5. पंचम उत्तरवाहिनी -

सभी उत्तरवाहिनियों में सबसे अधिक प्रचलित यह प्रवाह रामपुरा गांव से तिलकवाडा तक कुल 9-10 कि.मी. का हैं। दोनों तट मिलाकर इस उत्तरवाहिनी परिक्रमा की कुल लम्बाई 21 कि.मी. की होती हैं, अधिकतर लोग इस पूरी यात्रा को एक ही दिन में करते हैं। इस क्षेत्र में रहने वाले लोग अधिक जागरूक थे, अतः यह उत्तरवाहिनी का आज से 30-35 वर्ष पहले प्रारंभ कर दिया गया था। यहाँ पर गुजरात और महाराष्ट्र प्रांत के अधिक श्रद्धालु उत्तरवाहिनी करते हैं, साथ ही अन्य प्रांतों के भी श्रद्धालु रहते हैं पर उनकी संख्या कम रहती हैं।

इस वर्ष पूरे चैत्र महिने में लगभग 5 लाख श्रद्धालुजन उत्तरवाहिनी पद परिक्रमा करके गये। यहाँ पर बड़े-बड़े आश्रम, सेवा संस्थान, व्यापारी और समाजसेवी लोग श्रद्धालुओं के लिये महिने भर का केम्प लगाकर भोजन प्रसादी, चाय-नास्ता, चिकित्सा सामग्री आदि की व्यवस्था करते हैं। □

जल जीवन ध्येय - मेरा प्रयास

यह कहानी है मंजु देवी बलाई की जिनका पूरा जीवन जल संरक्षण व प्रकृति संरक्षण में बीता है। इन्होने जल बचाने के लिए अनेक कार्य किये है जो अनुकरणीय है। मंजु देवी बलाई वनदेवत गाँव मे एक सामान्य परिवार मे रहती है। परिवार मे सास, स्वयं पति व 2 बच्चे है। ये दसवी कक्षा तक पढ़ी लिखी है।

मंजु देवी बसाई एक सामान्य परिवार से है। परिवार की आजीविका का स्त्रोत नौकरी व खेती है। छोटा परिवार होने के कारण परिवार का गुजर बसर आसानी से हो जाता है। पढ़ी लिखी व नेतृत्व कुशलता के कारण सभी लोग इनका सम्मान करते है। वर्ष 2000 में संस्था सिकोईडिकोन से जुड़कर अपने कार्यो की शुरूआत की ग्राम स्तर पर ग्राम विकास समिति का गठन किया व बीडीसी सदस्यो ने अध्यक्ष पर इनका चुनाव किया। ग्राम विकास समिति अध्यक्ष बनने के बाद मे इनका चुनाव किसान सेवा समिति सहसचिव पर हुआ सहसचिव पद पर मनोनित होने के बाद मे मंजु देवी ने जल संरक्षण के कार्यो पर भी ध्यान रखा इन्होने आमजन महिलाओं को समान दृष्टि से

2002 मे भयंकर अकाल पड़ा था. बारिश नहीं होने के कारण मनुष्य जीव जन्तु पेड पौधे पानी के लिए तरस गये थे। चारो तरफ सूखा ही सूखा था। मंजु देवी ने भी बात रखी की संस्था सिकाईटिकोन की मदद से भी नाड़ी बनवाकर आगामी समय के लिए पानी का संरक्षण किया जा सकता है। मंजु देवी ने 2 लाख की लागत से नाड़ी बनवायी। आज भी वह नाडी सिकाईडिकोन की नाडी के नाम से प्रसिद्ध है।

आगे लेकर चलने का काम किया। लेकिन इनके द्वारा जल की दिशा में किये गये कार्य इनको अलग पहचान दिलाते है. जल संरक्षण में निम्न कार्य किये जो इस प्रकार है

मंजू देवी बताती है कि वर्ष 2002 मे भयंकर अकाल पड़ा था. बारिश नहीं होने के कारण मनुष्य जीव जन्तु पेड पौधे पानी के लिए तरस गये थे। चारो तरफ सूखा ही सूखा था। पंचायत में भी यह चर्चा चल रही थी की जानवरों व पेड़ के लिए पानी की क्या व्यवस्था की जाये? मंजु देवी ने भी बात रखी की संस्था सिकाईटिकोन की मदद से भी नाड़ी बनवाकर आगामी समय के लिए पानी का संरक्षण किया जा सकता है। ग्राम पंचायत वालो ने सहमति जताई। मंजु देवी ने ग्राम विकास समिति बैठक बुलाकर सभी सदस्यों से राय ली सभी ने अपनी सहमति दी। सेटरहेड पर प्रस्ताव लेकर किसान सेवा समिति को भेजा व अपनी बात रखी किसान सेवा समिति ने शीघ्र ही अपनी स्वीकृति दे दी। बस स्वीकृति मिलते ही मंजु देवी ने 2 साख की लागत से नाड़ी बनवायी। आज भी वह नाडी सिकाईडिकोन की नाडी के नाम प्रसिद्ध है नाडी बनने की खुशी मे संस्था द्वारा कटटा गजक भी लोगो को बाटी गई। वारिश का मौसम आते ही नाडी पानी से लबालब भर गयी जिससे आसपास के कुओं मे जल स्तर बढ़ गया मवेशियों व चरवाहो के लिए पीने के पानी की व्यवस्था हो

गयी।

मंजु जी बताती है कि वे जल ग्रहण कमेटी में सचिव पद पर रहकर काफी किसानी व महिलाओ को सम्मान्नित करवाया है जिसका विवरण इस प्रकार है।

- ग्राम पंचायत मे 45 फार्मोन्ड बनवाये जिनमें 10 जगदेवत मे 15 चिकाना मे 13 हिंगोटिया मे 3 चोरपुरा मे व 4 देवरी से बनवाये है। फार्मपोन्ड बनने से आसपास की बंजर जमीनों को किसानों ने उपजाउ बनाया है। बंजर जमीनों मे फसले होने लगी सालभर पीने योग्य का संचय होने लगा। यह एक बहुत बड़ा बदलाव था।
- रम्भा नदी पर लोगों को आने जाने के लिए रपटा निर्माण करवाया है।
- सम्पूर्ण ग्राम पंचायत में पीने के पानी की सुविधा हेतु 15 हैण्डपंप लगवाये है।
- खेत का पानी खेत में इसी आशय को लेकर 20 किसानो की खेतों पर मेडबंदी करवायी।
- खणदेयत के मुख्य तालाब में बारिश का पानी ज्यादा इकटठा हो सके इसके लिए जल ग्रहण की कार्ययोजना में काम जुडवाकर तालाब की मिटटी खुदवायी।
- 30 सकल पोन्ड (छोटे) बनवाये (10 चिकाना में 8 हिंगोटिया मे2 देवरी में 10 खणदेवत में)
- हिंगोटिया मे 11 खणदेवत प 2 एनिकट चिकाना में निर्माण कराया। एनिकट निर्माण होने से सबसे ज्यादा लाभ भूमिगत जल स्तर मे सुधार हुआ। आसपास की कई बीघा जमीन सिंचित हो रही है।
- अनुसूचित जनजाति विकास क्षेत्र परियोजना(बीआरजीएफ) के तहत गाँव हिंगोटिया में 50 हजार की लागत से पुरानी बेरी को खुदवाया जिससे बेरी मे पानी अधिक आया व लोगों के लिए पानी की सुविधा हो पायी। वर्तमान बेरी से लगभग 500 लोग पानी पी रहे है।
- पानी की सुविधा के लिए गाँव सुरजपुरा में 1 टयूबवेल ट्यूबवेल बगड़ी में जिला परिषद कोष से लगवायी।
- मवेषियों के पानी की सुविधा के लिए 2 पखेली (1) जाटो की ढाणी मे खणदेवत में) बनवायी। जिससे 2 गाँवो के जानवर पानी पी रहे है।
- 1 नादी हिंगोटिया मे खुदवायी जिससे रामजस पुत्र रामपाल मीणा जिनका परिवार आर्थिक स्थिति से बहुत कमजोर था आज किसान का परिवार समुद्र व सम्पन्न हो चुका है।
- मंजू देवी ने ग्राम विकास समिति बैठक में प्रस्ताव लिया की हिंगोटिया तालाब पूर्ण रूप से जर्जर यू टूट चुकी है। बारिश का पानी तालाब से बाहर निकलकर गाँव मे आ जाता था जिस पर कार्यवाही करते हुए जिला परिषद बैठक मे बीडीसी का प्रस्ताव देवर हिंगोटिया तालाब की पाल पर मिट्टी डलवाकर निर्माण करवाया।

मंजू देवी के किये प्रयासों व कामों को आज ग्राम पंचायत के आमजन याद करते है इन्होंने वर्ष 2005 में पंचायत समिति सदस्य (C.R.) वर्ष 2010 में जिला परिषद सदस्य (D.R.) रहकर राजनीति में भी अपना परचम लहराया। अपनी सटीक सोच व साफ रणनीति की बदौलत मंजु देवी बसाई ग्राम पंचायत ही नहीं अपितु पुरा ब्लॉक उनके कार्यो को याद करता है।

मंजू देवी बदलाव का यह श्रेय संख्या सिकाईटिकोन को देती है जिनके बताये आदशों, मार्गदर्शन व प्रेरणा से यह सब कर दिखाया है। वह कहती है कि आगे भी यह संस्था सिकोईडीकोन के बताये रास्तो व मार्गदर्शन का अनुसरण करती रहेगी।□

यमुना बाढ़ के मैदानों से संबंधित गाढ़ी मांडू प्लैन्टैशन ड्राइव

(प्रगति)

डॉ. सुनीश बक्शी

(लेखक - अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं मुख्य वन्यजीव वार्डन, वन विभाग, दिल्ली)

एक व्यापक वृक्षारोपण अभ्यास के तहत यमुना बाढ़ के मैदानों पर एक ट्रिपल ग्रिड प्लांट कवर विकसित किया गया है। इस ट्रिपल ग्रिड लैअर्ड डिजाइन के अनुसार पहलेलैअर में नदी की घास है, दूसरे लैअर में बांस के पौधे व तीसरे लैअर में विभिन्न फूल देने वाले पेड़/पौधे लगाए गये हैं।

यमुना बाढ़ के मैदानों का रेस्टरैशन प्लान 2

यमुना बाढ़ का मैदान यमुना नदी के किनारे वाली भूमि का एक विशाल क्षेत्र है, जो दिल्ली सहित उत्तरी भारत से होकर बहती है। बाढ़ का मैदान एक पारिस्थितिक रूप से समृद्ध क्षेत्र है जो विविध प्रकार की वनस्पतियों और जीवों का घर है। यमुना बाढ़ के मैदान के महत्व को विभिन्न दृष्टिकोणों से समझा जा सकता है:

पारिस्थितिक महत्वः यमुना बाढ़ का मैदान आर्द्रभूमि, घास के मैदान और जंगलों सहित विविध प्रकार के पारिस्थितिक तंत्रों का समर्थन करता है। ये पारिस्थितिक तंत्र विभिन्न प्रकार के पौधों और जानवरों के लिए आवास प्रदान करते हैं।

बाढ़ नियंत्रणः यमुना बाढ़ का मैदान क्षेत्र में बाढ़ के प्रभाव को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। मानसून के मौसम के दौरान, बाढ़ का मैदान एक प्राकृतिक बफर के रूप में कार्य करता है जो अतिरिक्त पानी को अवशोषित करता है और निचले इलाकों में बाढ़ को रोकता है।

- यमुना नदी, गंगा की एक सहायक नदी, भारत के उत्तरी भाग से होकर बहती है, और इसका बाढ़ का मैदान एक महत्वपूर्ण पारिस्थितिकी तंत्र है जो वनस्पतियों और जीवों की एक विस्तृत श्रृंखला का समर्थन करता है।
- फ्लडप्लेन एक प्राकृतिक जल भंडारण और निस्पंदन प्रणाली के रूप में कार्य करता है, जो भूजल को फिर से भरने और मानसून के दौरान बाढ़ को कम करने में मदद करता है।
- यमुना फ्लडप्लेन मिट्टी संरक्षण, कार्बन पृथक्करण और मनोरंजन जैसी कई पारिस्थितिकी तंत्र सेवाएं भी प्रदान करता है, जो इसे एक महत्वपूर्ण प्राकृतिक संपत्ति बनाता है।

यमुना बाढ़ का मैदान एक महत्वपूर्ण प्राकृतिक संपत्ति है और इसके प्राकृतिक पारिस्थितिकी तंत्र को बहाल करने और मानव और पर्यावरण दोनों को स्थायी लाभ प्रदान करने के लिए है। वन विभाग फ्लडप्लेन का रेस्टरैशन कर रहा है और आने वाली पीढ़ियों के लिए इसकी स्थिरता सुनिश्चित कर रहा है।

बाढ़ के मैदानों पर वृक्षारोपण का प्रभावः

बाढ़ के मैदानों पर वृक्षारोपण और वनस्पति मिट्टी को स्थिर करने, कटाव को रोकने और अतिरिक्त पानी को अवशोषित करके बाढ़ के जोखिम को कम करने में मदद कर सकते हैं। वनस्पति एक प्राकृतिक बफर के रूप में कार्य करती है, पानी के प्रवाह को धीमा करती है और इसके क्षरणकारी बल को कम करती है। पेड़ और पौधे भूजल पुनर्भरण में भी मदद करते हैं, बाढ़ के मैदानों की जल-धारण क्षमता में सुधार करते हैं और सूखे के प्रभाव को कम करते हैं।

बाढ़ के मैदानों में वृक्षारोपण के लिए रोड मैप

बाढ़ के मैदानों पर वृक्षारोपण के लिए उपयुक्त क्षेत्रों की पहचान, मिट्टी के प्रकार, जल विज्ञान की स्थिति और स्थानीय पारिस्थितिक विशेषताओं जैसे कारकों पर विचार करना। उपयुक्त देशी पौधों की प्रजातियों का चयन जो बाढ़ के मैदान के वातावरण के अनुकूल हों और जैव विविधता संरक्षण में योगदान दें। वृक्षारोपण गतिविधियाँ, जिसमें साइट की तैयारी, रोपण तकनीकें, और रोपण के बाद की देखभाल जैसे सिंचाई, निराई और निगरानी शामिल हैं। प्रि या में स्थानीय समुदायों और हितधारकों को शामिल करना, स्वामित्व की भावना को बढ़ावा देना और दीर्घकालिक स्थिरता को बढ़ावा देना।

बाढ़ के मैदानों में वृक्षारोपण के पीछे वैज्ञानिक सिद्धांत

पारिस्थितिक विचार : देशी प्रजातियों को लगाने से पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखने में मदद मिलती है और स्थानीय पारिस्थितिकी तंत्र का समर्थन होता है। यह पक्षियों, कीड़ों और जलीय जीवों सहित स्थानीय वन्यजीवों के अस्तित्व को बढ़ावा देता है।

हाइड्रोलॉजिकल लाभः बाढ़ के मैदानों पर वनस्पति वर्षा जल को रोकती है, अपवाह को कम करती है, और पानी को मिट्टी में घुसपैठ करने देती है,

भूजल को रिचार्ज करती है और बाढ़ की घटनाओं की तीव्रता को कम करती है।

मृदा संरक्षणः पेड़ों की जड़ें मिट्टी को स्थिर करती हैं और कटाव को रोकती हैं, बाढ़ के मैदान को क्षरण से बचाती हैं और इसकी उर्वरता को बनाए रखती हैं।

वृक्षारोपण योजना

पहले चरण में, 4.50 लाख ह्यह्र. मीटर भूमि पर वृक्षारोपण किया जिसमें 2 लाख sq. मीटर से अधिक भूमि पर बांस का वृक्षारोपण, 70,000 sq. मीटर से अधिक नदी घास और 1.80 लाख sq. मीटर से अधिक भूमि पर फूलों के पेड़ शामिल हैं।

रेस्टरैशन और कायाकल्प कार्यों के हिस्से के रूप में, गुलमोहर (548 नग), अमलतास (5524 नग), लेगरस्ट्रोमिया (1279), एरिथ्रिना (2469), ताकोमा (640) जैसे 13,371 फूलों / सजावटी पेड़ों की एक किस्म), जकारंदा (877), ढाक (407) और सेमल (1626) लगाए। 15 से 25 मीटर की ऊंचाई तक बढ़ने वाले ये पेड़ हरित आवरण बढ़ाने और बाढ़ के मैदानों के सौंदर्य को बढ़ाने में सहायक होंगे।

इस तरह, बाँस की तीन प्रजातियाँ - बम्बूसा नूतन (32,691), बम्बुस तुल्दा (19,228) और डेंड्रोकैलेमस (18,321) इस खंड पर लगाए हैं। बाँस अन्य पौधों/पेड़ों की तुलना में 30 प्रतिशत अधिक ऑक्सीजन उत्सर्जित करने के अलावा उच्च जल प्रतिधारण और मृदा संरक्षण के लिए जाना जाता है और इस प्रकार वायु की गुणवत्ता में सुधार करता है। जबकि बम्बूसानूतन अनिवार्य रूप से एक सजावटी प्रजाति है; अन्य दो प्रजातियाँ- बम्बुस टुल्डा और डेंड्रोकैलेमस का कुटीर उद्योगों में

कच्चे माल के रूप में बड़े पैमाने पर उपयोग किया जाता है। बाढ़ के मैदानों की बहाली के लिए नदी की घास अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस खंड पर नदी घास की तीन प्रजातियां- कास (1,38,075), मूंज (1,39,604) और वर्टीवर (1,29,796) लगाई जाएंगी। वेटिवर घास भूजल को रिचार्ज करने, जल निकासी प्रणालियों और जल निकायों की गाद को कम करने और खराब और प्रदूषित मिट्टी के उपचार के लिए बेहद उपयोगी है।

टिवर घास अत्यधिक उच्च स्तर की भारी धातुओं को सहन कर सकती है और इसे मिट्टी और जल संरक्षण के लिए कम लागत वाली तकनीक भी माना जाता है। इसी तरह मूंज घास बारहमासी घास की प्रजाति है और एक बार चढ़ाने के बाद पौधे की जड़ें फैलने के बाद करीब 24-30 साल तक नहीं मरती हैं। मूंज घास मिट्टी के कटाव को रोकने का काम करती है। बाढ़ के मैदानों का कायाकल्प पारिस्थितिक बहाली के सार्वभौमिक सिद्धांतों के माध्यम से प्राकृतिक अवसादों को बहाल करके, जलग्रहण क्षेत्र बनाकर, बाढ़ के मैदानों के जंगलों, घास के मैदानों को पुनर्जीवित करके और विशेष रूप से पानी और स्थलीय पक्षियों के लिए अनुकूल आवास बनाकर किया जा रहा है।

दिल्ली में यमुना नदी के किनारे गढ़ी मांडू में वृक्षारोपण की पहल का स्थानीय समुदाय और पर्यावरण पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है। वन विभाग का उद्देश्य यमुना बाढ़ के मैदान, वनीकरण और हरित गलियारों के निर्माण के प्राकृतिक पारिस्थितिकी तंत्र को बेहतर करना है। कुछ प्रमुख जानकारी इस विषय में :

बेहतर मिट्टी की उर्वरता: वृक्षारोपण की पहल ने क्षेत्र में मिट्टी की उर्वरता में सुधार करने में मदद की है।

जैव विविधता संरक्षण : वृक्षारोपण की पहल ने क्षेत्र में पक्षियों, कीड़ों और अन्य वन्यजीवों को आकर्षित करके स्थानीय पारिस्थितिकी में सुधार करने में मदद की है।

बेहतर हवा और पानी की गुणवत्ता : पेड़ और पौधे हवा और पानी से प्रदूषकों को अवशोषित करने के लिए जाने जाते हैं, जिससे गढ़ी मांडू में हवा और पानी की गुणवत्ता में सुधार करने में मदद मिली है।

हरित पट्टी का विकास : वन विभाग ने गढ़ी मांडू में यमुना नदी के किनारे एक हरित पट्टी विकसित करने की पहल की है। इसमें हरियाली को बढ़ावा देने और वायु और ध्वनि प्रदूषण को कम करने के लिए क्षेत्र में पेड़ और झाड़ियाँ लगाना शामिल है।

यह साइट इलाके में अपनी तरह के एक सार्वजनिक हरित क्षेत्र के रूप में विकसित होगी। □

जयंत सहस्रबुद्धे जी को श्रद्धांजलि

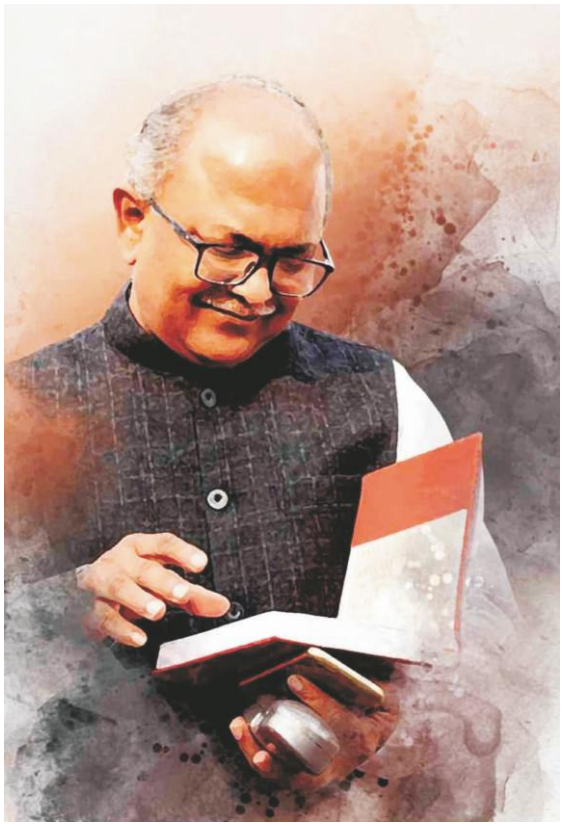

17 अप्रैल 1966 - 02 जून 2023

विज्ञान भारती के अखिल भारतीय संगठन मंत्री श्री जयंत सहस्रबुद्धे जी का 2 जून 2023 को देहावसान हो गया। वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक थे। वह संघ कार्य में विभिन्न दायित्व पर रहें। विभिन्न विषयों पर उनका गहरा अध्ययन था। वे सौम्य स्वभाव, सरल व्यवहार, मिलनसार, संगठन कौशल जैसे कई अच्छे गुणों के धनी थे। प्राकृतिक और पारंपरिक जीवनशैली के अन्यतम आग्रही थे।

नर्मदा समग्र के कुछ कार्यों को वैचारिक रूप से प्रतिपादित करने में आपका मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। नदी और विज्ञान विषय पर कैसे समसामयिक रूप से कार्य किया जा सके एवं जन-जन तक सामान्य ज्ञान-विज्ञान के माध्यम से जागरूकता लाई जाए एवं व्यावहारिक रूप से कार्य किया जाए, जिससे समाज की सहभागिता से नदियाँ सदानीरा बनीं रहें, जैसे विषयों पर आपका चिंतन रहा।

आपके द्वारा कृत कार्यों से हमें सदैव प्रेरणा मिलती रहेगी। श्री जयंत सहस्त्रबुद्धे जी को विनम्र श्रद्धांजली। □

नर्मदा समग्र के न्यासी और कार्यकर्ताओं ने श्रद्धेय श्री जयंत सहस्रबुद्धे जी के देहावसान पर दुःख व्यक्त किया और इसे एक अपूरणीय क्षति बताया। सभी ने उनकी आत्मा की शांति के लिए 2 मिनट का मौन धारण कर श्रद्धांजलि अर्पित की।

स्व. अनिल दवे जी - षष्ठम पुण्य स्मरण, 18 मई 2023

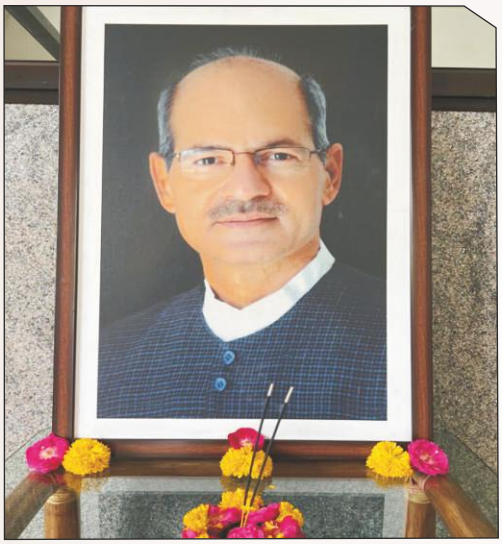

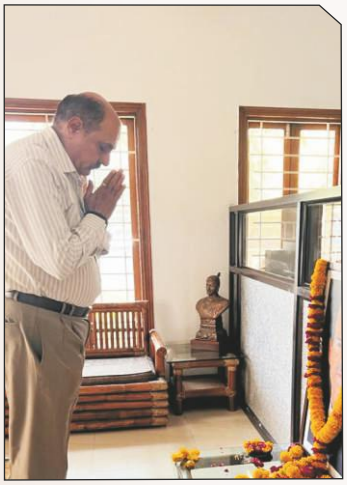

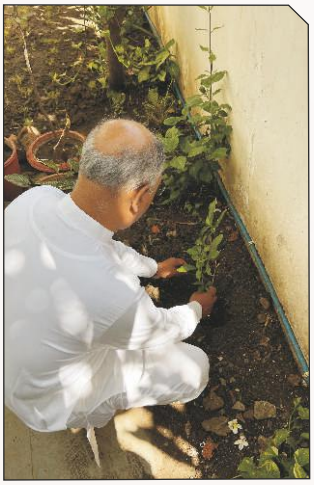

भजन संध्या की झलकियाँ

पौधा रोपण

नर्मदा समग्र न्यास द्वारा रेडक्रॉस सोसाइटी म.प्र. के सहयोग से आयोजित हायजिन कीट वितरण कार्यक्रम

नर्मदा समग्र के संस्थापक श्री अनिल माधव दवे जी की छठवीं पुण्यतिथि नर्मदा समग्र संकल्प दिवस के अवसर पर रेवा सेवा केंद्र ककराना, जिला अलीराजपुर में रेडक्रॉस सोसायटी द्वारा प्रदत हायजिन कीट का वितरणकिया गया। **नर्मदा समग्र द्वारा आयोजित संकल्प दिवस कार्यक्रम के दौरान नदी एम्बुलेंस कार्य क्षेत्र के ग्राम ककराना में 172 बालिकाओं एवं महिलाओं को हाईजेनिक किट का वितरण किया गया।** इस अवसर पर जिला पंचायत अध्यक्ष अलीराजपुर श्रीमति अनिता नागर सिंह चौहान, सोंडवा एसडीएम सुश्री प्रियांशी भंवर, जिला पंचायत सदस्य श्रीमति हजरी बाई खरत, नायब तहसीलदार श्री बघेल, नर्मदा समग्र भाग टोली सदस्य श्री शैलेश पंवार, मुख्य समन्वयक श्री मनोज जोशी, भाग समन्वयक श्री हिमांशु गुप्ता, केंद्र समन्वयक श्री राजेश जादम, नदी एम्बुलेंस के एवं अन्य स्थानीय कार्यकता उपस्थित रहे। □

किट वितरण - द्वितीय चरण - 19 जून 2023

रेडक्रॉस सोसाइटी महा सचिव श्री प्रदीप जी त्रिपाठी भोपाल मध्यप्रदेश द्वारा नवीन नदी एम्बुलेंस लोकार्पण में घोषित हाईजेनिक किट (नर्मदा समग्र न्यास को प्रदत्त) वितरण की अगली श्रृंखला में पधारे अतिथि श्रीमती सुलेखा वकील सिंह उपाध्यक्ष जिला पंचायत अलीराजपुर, श्रीमती बामनिया मैडम, महिला एवं बाल विकास अधिकारी विकासखंड सोंडवा, श्री वकील सिंह पूर्व जिला अध्यक्ष भाजपा, श्री जयपाल सिंह खरत सरपंच वालपुर ग्राम पंचायत के आतिथ्य में मां नर्मदा एवं स्वर्गीय श्री अनिल माधव जी दवे के चित्र पर पूजन माल्यार्पण कर आयोजन का श्री गणेश हुआ। अतिथियों का स्वागत पौधा प्रदान कर किया गया। पूर्व में ग्राम पंचायत ककराना की कुल 231 बालिकाओं एवं महिलाओं में 172 बालिकाओं एवं महिलाओं को 18 मई 2023 को हाइजेनिक किट का वितरण किया गया था।शेष बची बालिकाओं महिलाओं को **19 जून 2023 को पुनः हाइजेनिक किट का वितरण किया गया जिसमें ग्राम पंचायत ककराना कि 48 बालिकाओं महिलाओं ने कीट प्राप्त किए।** हाईजेनिक किट वितरण की प्रस्तावना नदी एम्बुलेंस चालक श्री बलवंत सोलंकी ने वनवासी बोली में रखी। नर्मदा समग्र के मुख्य समन्वयक श्री मनोज जोशी द्वारा किट वितरण रेवा सेवा केंद्र की गतिविधियों से सबको अवगत करवाया।

अतिथि उद्बोधन में वकील सिंह जी ने नर्मदा समग्र द्वारा वनवासी बंधुओं के जीवन स्तर में सुधार के लिए किए जा रहे प्रयासों के बारे में विस्तार से बताया। श्री जयपाल सिंह खरत ने नर्मदा समग्र द्वारा संचालित नदी एंबुलेंस की कार्य पद्धति एवं रेडक्रॉस सोसायटी भोपाल द्वारा प्रदत्त हाईजेनिक किट के बारे में वनवासी भाषा में बालिकाओं एवं महिलाओं के मध्य विषय रखा।श्रीमति बामनिया ने रेडक्रॉस द्वारा प्रदत्त हाईजेनिक किट एवं सुव्यवस्थित वितरण हेतु नर्मदा समग्र की सराहना की। श्रीमति सुलेखा वकील सिंह द्वारा किट में उपलब्ध सामग्री एवं उसके उपयोग के बारे में उपस्थित बालिकाओं एवं महिलाओं के बीच अपने विचार रखे एवं रेड' ॅस सोसायटी द्वारा वनवासी बहनों के लिए प्रदत्त हाईजेनिक किट हेतु आभार जताया।

हाईजेनिक किट वितरण हेतु आयोजन में नर्मदा समग्र की ओर से भाग समन्वयक श्री हिमांशु गुप्ता, रेवा सेवा केंद्र प्रभारी श्री राजेश जादम, नदी एंबुलेंस श्री गुमान सिंह डामोर, नदी एंबुलेंस चालक श्री बलवंत, नासला एवं अन्य नर्मदा समग्र के कार्यकर्ता उपस्थित रहे।अंत में मुख्य समन्वयक श्री मनोज जोशी ने रेडक्रॉस सोसायटी भोपाल मध्यप्रदेश एवं अतिथियों का आभार व्यक्त करते हुए स्मृति स्वरूप नर्मदा समग्र पत्रिका का नीर, नदी और नारी विशेषांक प्रदान किया। □

चलो घाट साफ करें

नर्मदा समग्र एक दशक से भी ज्यादा समय से मां नर्मदा नदी की अविरलता और स्वच्छता को ध्यान में रखते हुये अपने घाट टोली कार्यकर्ताओं के साथ घाटों पर उत्साह और स्वच्छता के लिये सतत कार्य करती है। इसी क्रम में 2 अप्रैल 2023 को नर्मदापुरम भाग द्वारा एक साथ एक समय पर चिन्हित घाटों पर घाट सफाई का कार्यक्रम किया गया जिसमें कार्यकर्ताओं ने बढ़-चढ़कर भाग लिया और घाटों पर एकत्रित होकर लगायें गये पौधों के संरक्षण के लिये कार्य किये। इस कार्यक्रम में भाग लेने वाले घाट सिवनी, भारकच्छ, बुधनी, बान्द्राभान, जहांनपुर, छिपानेर, विवेकानंद घाट नर्मदापुरम, सीलकण्ड, नीलकण्ड, मण्डी, नेहलाई और तालनगरी रहें। □

ईको ब्रिक्स

5 जून विश्व पर्यावरण दिवस

5 जून विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर बान्द्राभान तवा संगम घाट पर बच्चों कि चौपाल लगाई गई जिसमें प्लास्टिक से पर्यावरण को होने वाले नुकसान के बाने में बताया गया। बच्चों को बताया गया कि प्लास्टिक पर्यावरण में घुलनशील पदार्थ नही है यह लंबे समय तक पर्यावरण में रहकर पर्यावरण और प्राणी जगत को नुकसान पहुंचाता है। इसी क्रम में बच्चों को ईको ब्रीक्स बनाना सिखाया गया एवं बच्चों द्वारा बढ़-चढ़कर ईको ब्रिक्स बनाई गई। □

योग दिवस के उपलक्ष में नावडातोड़ी घाट पर बच्चों के साथ मालवा-निमाड़ भाग समन्वयक ने योग किया एवं पर्यावरण प्रदूषण मे पॉलिथिन सबसे बड़ा कारण विषय पर बच्चों के साथ चर्चा की। सभी ने पर्यावरण एवं नदियों को स्वच्छ बनाने का संकल्प लिया एवं ईकोब्रिक्स बनाने का प्रशिक्षण दिया।

जिला अंधत्व नियंत्रण समिति अलीराजपुर एवं शंकरा आई सेंटर इंदौर के तत्वधान में दिनांक 13 /06/ 2023 निशुल्क मोतियाबिंद जांच एवं ऑपरेशन, लेंस प्रत्यारोपण विधि द्वारा सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र सोंडवा जिला अलीराजपुर में किया गया। जिसमें 13 मरीजों की जांच कर उन्हें इंदौर आने के लिए निवेदन किया। विशेष सहयोग, वालपुर पंचायत एवं नर्मदा समग्र रेवा सेवा केंद्र ककराना के कार्यकर्ताओं का रहा। उपस्थित कार्यकर्ता मंडल अध्यक्ष जयपाल खरत, विकास राठोड़ मीडिया प्रभारी एवं नदी एम्बुलेन्स समन्वयक गुमानसिंह डामोर, चिकित्सक डॉ नरेंद्र जोशी, बंलवत सोलंकी एवं स्वास्थ्य केन्द्र के डॉ. गेंहलोत जी एवं टीम भी उपस्थित रही ।

जबलपुर स्थित रेवा रेडियो में 5 जून विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर रंगोली एवं चित्रकला प्रतियोगिता के साथ ही इकोब्रिक्स का प्रशिक्षण श्री लालाराम चक्रवर्ती द्वारा दिया गया।

उत्तराखंड के पुर्व मुख्यमंत्री त्रिवेंद्र सिंह रावत जी अपने 11 मई 2023 को भोपाल प्रवास के दौरान 'नदी का घर' पधारे। न्यासी सदस्यों एवं मुख्य कार्यकारी ने नर्मदा समग्र की गतिविधियों के बारे में बताया और संस्था संबंधित साहित्य प्रदान किया।

चौथे "राष्ट्रीय जल पुरस्कार' में जल संसाधनों के प्रबंधन, संरक्षण एवं संवर्धन के कार्यों में मध्यप्रदेश को "सर्वश्रेष्ठ राज्य" का पुरस्कार

मध्यप्रदेश को जल संसाधन के संरक्षण, संवर्धन और प्रबंधन में उत्कृष्ट कार्यों के लिए सर्वश्रेष्ठ राज्य श्रेणी का प्रथम राष्ट्रीय जल पुरस्कार प्राप्त हुआ है। यह देश का चौथा राष्ट्रीय जल पुरस्कार-2022 है। उप राष्ट्रपति श्री जगदीप धनखड़ ने मध्यप्रदेश के जल संसाधन मंत्री श्री तुलसीराम सिलावट और अपर मुख्य सचिव श्री एस.एन. मिश्र को नई दिल्ली विज्ञान भवन में प्रथम पुरस्कार के प्रशस्ति-पत्र और ट्रॉफी से सम्मानित किया। केंद्रीय जल शक्ति मंत्री श्री गजेंद्र सिंह शेखावत, जल शक्ति राज्य मंत्री श्री प्रह्लाद सिंह पटेल और श्री बिश्वेश्वर टुडु भी उपस्थित थे। कार्यक्रम में 11 विभिन्न श्रेणी में 41 विजेताओं को सम्मानित किया गया। इंदौर नगर निगम को जल आपूर्ति तथा वितरण में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए सर्वश्रेष्ठ शहरी स्थानीय निकाय श्रेणी के द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। केंद्रीय जल शक्ति मंत्री श्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने इंदौर के महापौर श्री पुष्यमित्र भार्गव और अपर आयुक्त श्री सिद्धार्थ जैन को प्रशस्ति-पत्र, ट्रॉफी और एक लाख 50 हजार रूपये नकद पुरस्कार से सम्मानित किया।

जल संसाधन मंत्री श्री सिलावट ने कहा कि मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान के नेतृत्व में कृषि और किसानों के लिए ऐतिहासिक काम हुए हैं। विगत 18 वर्ष में प्रदेश में सिंचाई का रकबा बढ़ कर 45 लाख हेक्टेयर हो गया है, जिसे वर्ष 2025 तक 65 लाख हेक्टेयर किये जाने के लिए राज्य सरकार प्रतिबद्ध है। जल प्रबंधन के हर क्षेत्र में मध्यप्रदेश ने उत्कृष्ट कार्य किया है।□

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने म.प्र. को "राष्ट्रीय जल पुरस्कार-2022" मिलने पर दी बधाई

मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने मध्यप्रदेश को ''राष्ट्रीय जल पुरस्कार- 2022'' मिलने पर प्रदेशवासियों को बधाई और शुभकामनाएँ दी हैं। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि- यह सम्मान प्रत्येक प्रदेशवासी के लिए गर्व का विषय है। ऐसे प्रयासों से न केवल हमारी धरती बचेगी, बल्कि इस धरा पर जीवन भी समृद्ध होगा। उप राष्ट्रपति श्री जगदीप धनखड़ ने नई दिल्ली के विज्ञान भवन में केंद्रीय जल शक्ति मंत्रालय के चौथे राष्ट्रीय जल पुरस्कार समारोह में मध्यप्रदेश को जल-संरक्षण, प्रबंधन एवं उपयोग के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए सर्वश्रेष्ठ राज्य श्रेणी में प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया। उप राष्ट्रपति श्री धनखड़ से प्रदेश के जल संसाधन मंत्री श्री तुलसीराम सिलावट ने यह पुरस्कार ग्रहण किया।

जल उपयोग दक्षता उन्नयन

प्रदेश में बांध से सीधे खेतों तक भूमिगत पाइप लाइन से जल पहुँचाने का नवाचार हुआ है। प्रदेश की मोहनपुरा एवं कुंडालिया परियोजना, जिसकी सिंचाई क्षमता 2 लाख 25 हज़ार हेक्टेयर है, जल उपयोग दक्षता उन्नयन के क्षेत्र में अनुकरणीय सिंचाई परियोजना के रूप में स्थापित हो चुकी है।

क्या आपके आसपास भी है ऐसा कोई बड़ा -पुराना

"Heritage Tree"

अगर है तो आप भी उसे आलिंगन कर उसका चित्र सोशल मीडिया #Heritage Tree हैशटैग का प्रयोग कर, पेड़ का नाम, स्थान, लगभग कितना पुराना है, उससे जुड़ी कोई रोचक बात हो तो अवश्य शेयर करें।

ग्राम - सिवनी, तह. - पिपरिया, जिला - नर्मदापुरम
वृक्ष की आयु लगभग 120 वर्ष है, वृक्ष का नाम बरगद है, इसका व्यास 3 लोगो के हाथों से आलिंगन करने पर तने की परिधि ध्यान में आती है। स्थानीय लोग बड़ बाबा के नाम से वृक्ष को पुकारते है। मूल वृक्ष से 10 अतिरिक्त श्रृंखला पलवित हुई है। स्थानीय लोग बहुत ही श्रद्धा से इस वृक्ष को पूजते है।

ग्राम - भारकच्छ, घाट टोली - भारकच्छ,
जिला - रायसेन (वृक्ष की आयु लगभग 100 वर्ष है)

वार्षिक सदस्यता प्रपत्र

मैं ..... एक वर्ष के लिए नर्मदा समग्र त्रैमासिक पत्रिका की सदस्यता लेना चाहता/चाहती हूँ।

4 अंक - वार्षिक शुल्क 100 रूपये, (पोस्टल शुल्क सम्मिलित)

नाम : _____ लिंग : _____

कार्य : व्यवसाय ☐ कृषि ☐ नौकरी ☐ विद्यार्थी ☐ संगठन ☐

संस्था : _____ दायित्व/पद : _____

फोन : _____ मोबाइल : _____ ई-मेल : _____

पता : _____

जिला : _____ पिन कोड : _____ राज्य : _____

भुगतान विवरण : चेक/डिमांड ड्राफ्ट नं. : _____ दिनांक : _____ रूपये : _____

अदाकर्ता बैंक : _____ शाखा : _____

खाते की जानकारी (ऑन लाईन भुगतान हेतु)
Narmada Samagra
State Bank of India
Shivaji Nagar Branch, Bhopal, M.P.
Ac no. 30304495111
IFSC: SBIN0005798

दिनांक : _____ हस्ताक्षर : _____

"नदी का घर"
सीनियर एमआईजी -2, अंकुर कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल, मध्यप्रदेश - 462016
दूरभाष + 91-755-2460754 ई-मेल : narmada.media@gmail.com

परम पूज्य स्वामी चिदानन्द सरस्वती जी, परमार्थ निकेतन, ऋषिकेश से नर्मदा समग्र के लिए मार्गदर्शन एवं आशीर्वाद प्राप्त हुआ। आप पूर्व में नदी महोत्सव में पधारे थे, जिसकी स्मारिका की प्रति एवं नर्मदा समग्र का साहित्य पूज्य स्वामी जी का प्रदान किया।

www.narmadasamagra.org

RNI No. - MPHIN/2011/38276

नर्मदा समग्र न्यास

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक श्री करण सिंह कौशिक द्वारा नियो प्रिंटर्स, 17 बी-सेक्टर, औद्योगिक क्षेत्र गोविन्दपुरा, भोपाल एवं नदी का घर सीनियर एम.आई.जी.-2 अंकुर कॉलोनी, पारूल अस्पताल के पास शिवाजी नगर, भोपाल-462016 से प्रकाशित।
संपादक कार्तिक सप्रे। फोन नं. : 0755-2460754